श्रीः

सामुद्रिक-कुञ्चिका

लेखक—

स्वर्गीय पं० कालिकाप्रसाद राजज्योतिषी

बनारस स्टेट।

* श्रीः *

सामुद्रिक-कुञ्चिका

बनारस स्टेट रामनगर निवासिना श्री १०८ काशिराजाश्रित
श्रीमद्धनुमानप्रसाद ज्योतिर्विदात्मजेन राजज्योतिषी
स्वर्गीय पं० कालिकाप्रसाद शर्मणा
सङ्कलितम्।

काशिराजाङ्ग्लविद्यालया (मे० हा० स्कू०) ध्यापकेन
द्विवेद्युपाह्व पं० ठाकुरप्रसाद शर्मणा
साहित्याचार्येण संशोधितम्।

स्वर्गीय पं० कालिकाप्रसादात्मजेन
राजज्योतिषी पं० गौरीशङ्कर शर्मणा
काशीस्थ साङ्गवेदविद्यालय-यन्त्रालये मुद्रयित्वा
प्रकाशितम्।

सं० १९९२ वि०

मूल्य ॥=)

श्रीमन्महाराजाधिराजद्विजराजकाशिराज केप्टन
सर श्री १०८ आदित्यनारायणसिंह
के. सी. एस. आई. महोदय ।

शरच्छशिस्वच्छयशः प्रकाश–
प्रकाशिताऽशेषदिशाऽवकाशाः ।
जयन्ति काशीविबुधाक्षिचन्द्रा
आदित्यनारायणसिंहभूपाः ॥

समर्पण

स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराज द्विजराज काशिराज परम-गौरवास्पद श्री १०८ कैप्टन सर आदित्यनारायण सिंह शर्म धर्मवीर पुङ्गव के० सी० एस्० आई० महोदय के करकमलों में

महाराज !

श्रीमान् नीतिशास्त्र में परम प्रवीण, विद्या-प्रधान-पीठ, विद्वज्जन-संकुला, पवित्र काशी के सर्वश्रेष्ठ अधिपति और सनातनधर्म के पूर्ण अनुयायी हैं। अतएव भारतवर्षीय राजाओं में श्रीमान् का सर्व श्रेष्ठ आसन है। महाराज से हिन्दू मात्र को परम गौरव है। श्रीमान् अपने निष्पक्षपात न्याय के आचरण से सम्पूर्ण प्रजाओं के प्राणाधार हैं। इस कारण विद्वन्मण्डल को परम हर्ष और सन्तोष है।

इस पुस्तक के प्रकाशक का राज्य से बहुकालिक सम्बन्ध है। इसके पिता 'सामुद्रिक रहस्य' का द्वितीय संस्करण श्रीमान् को अर्पण कर सेवा कर चुके हैं। अतएव पूर्व प्रथा के अनुसार इस पितृसंकलित 'सामुद्रिक कुञ्चिका' नामक पुस्तक का प्रथम संस्करण महाराज के कर कमलों में सादर समर्पित है। आशा है श्रीमान् इसे स्वीकार कर पूर्ववत मुझे भी प्रोत्साहित करेंगे।

प्राचीन—
रामनगर बनारस स्टेट
सं० १९९२ वि०
वसन्त पञ्चमी

किमधिकमिति
श्रीमान् का कृपेच्छु
गौरीशंकर राज ज्योतिषी

पाठक महोदयो !

मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय पं० कालिका प्रसाद राज्य ज्योतिषीजी ने 'सामुद्रिक रहस्य' 'सामुद्रिक दर्पण' तथा 'सामुद्रिक सोपान' के प्रकाशन द्वारा आप लोगों की जो सेवा की है वह तो आपको विदित ही है। इसके अतिरिक्त वे इसी विषय की अन्य पुस्तक-पुष्पाञ्जलि यथा समय समर्पित करना चाहते थे। परन्तु दैव-दुर्विपाक से उनकी अभीष्ट सिद्धि न हो सकी। वे स्वयं इस लोक का परित्याग कर कैलासवासी हुए।

अस्तु, उनके पास नष्ट जन्म पत्र की बहुत सी सामग्री एकत्र थी जिसे वे समय पाकर इस 'सामुद्रिककुञ्जिका' में प्रकाशित करना चाहते थे। अत एव उन्होंने उनमें से कुछ अत्युपयोगी विषय पृथक कर इस पुस्तक में अङ्कित किया और स्वतः वे उनका अनुभव भी करने लगे। परन्तु मध्य में ही विघ्न उपस्थित हो जानेसे पुस्तक प्रकाशित न हो सकी। सामुद्रिक रहस्य द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना तथा विज्ञापन द्वारा इसकी सूचना पाठकों को पहिले ही मिल चुकी थी। इसलिये कुछ ही दिनो के बाद अनेक महानुभावों के बहुत से पत्र आने लगे उत्तर देते नाकों दम हो गया। इस कारण अनेक कठिनाई होते हुए भी इस पुस्तक को प्रकाशित करना अनिवार्य हो गया।

अतः हमने पिताजी के परम मित्र पू० पा० पं० ठाकुर प्रसाद द्विवेदी सा० आ० (अध्यापक मेस्टन हाई स्कूल रामनगर) के पास जाकर इस कार्य को निवेदन किया और अनुमति मिलने पर इसके संशोधनादि का भार आप को ही सौंपा। हमारे स्वर्गीय पिताजी भी प्रायः अपने प्रत्येक कार्यों में आपसे अनुमति तथा परामर्श लिया

करते थे। पुस्तक लेखनादि काल में तो आप सर्वदा साहाय्य प्रदान करते थे। इस पुस्तक के संकलन काल में भी आपने यथेष्ट योग दिया है, और आज भी अवकाश न होने पर भी कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार कर आपने मेरे उत्साह को बढ़ाया इस कृपाके लिये हम आपके विशेष कृतज्ञ हैं।

अब ग्राहकाऽनुग्राहक महोदयों से निवेदन है कि यदि आप लोग उदारता पूर्वक इसे अपनाने की कृपा करेंगे तो भविष्य में और भी ऐसी ही पुस्तकें उपस्थित करने का उद्योग किया जायगा। पिताजी के रहते इस विषय की जैसी पूर्णता होती वह कदाचित मेरे द्वारा नहीं हो सकती क्यों कि मैं तो अपने को अल्पज्ञ ही समझता हूं। अतः इसमें यदि कोई त्रुटि विद्वानों को दृष्टिगोचर हो तो निःसंकोच सूचित करनेकी कृपा करें प्रकाशक उनका सदैव आभारी रहेगा।

भवदीय—

गौरीशङ्कर प्रसाद राज ज्योतिषी

सामुद्रिक सदन, रामनगर बनारस स्टेट।

परिचय

—※—

जगन्नियन्ता जगदीश्वर की लीला अपार है। वह कब क्या करता है और कब क्या करेगा इसका कुछ पता नहीं। उसकी इच्छा के विरुद्ध एक पत्ता भी हिल नहीं सकता। इस बात को जानते हुए भी मनुष्य बड़े से बड़ा मनोरथ कर यथावकाश उसकी सिद्धि के लिये उद्योग करते हैं। ठीक है, उद्योग करना मनुष्य मात्र का कर्तव्य है। क्योंकि 'उद्योगेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।' और यहीं तक मनुष्यों को अधिकार भी परमेश्वर ने दिया है।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन" (गीता)

अस्तु, हमारे पं० कालिकाप्रसादजी राजज्योतिषी का भी यही सिद्धान्त था कि काम करते चलो, फल परमेश्वर के हाथ है। आप अपने धुन के पक्के थे। वर्षों कड़ी बीमारी (संग्रहणी) से पीड़ित होते हुए भी आपने कभी पठन पाठन तथा विषयान्वेषण से मुख नहीं मोड़ा और न उत्साह हीन ही हुए।

आप ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता थे। फलित आपका बहुत ही अच्छा था। जन्म कुण्डली का फल तो प्रायः अचूक होता था। प्रश्न कहने की रीति भी बड़ी उत्तम थी। अधिकतर प्रश्न का उत्तर ठीक घटता था। इसके अतिरिक्त मन्त्र शास्त्र का भी आपको अच्छा ज्ञान था।

यद्यपि ज्योतिषीजी अपने विषय के पण्डित थे तथापि किसी से कोई विषय सीखने में आपको कभी कुछ भी संकोच नहीं हुआ। वे गुरु मानकर झट नवीन विषय सीख लेना अपना कर्तव्य समझते थे। जिसका फल यह हुआ कि सं० १९७७ वि० में कामरूप कामाख्या के एक विद्वान से आपका साक्षात्कार हुआ और उनकी अपूर्व फल कथन प्रणाली को देखकर मुग्ध हो गए और उन्हें प्रसन्न कर सामुद्रिक शास्त्र का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। जिसके प्रमाण स्वरूप 'सामुद्रिक रहस्यादि' अनेक ग्रन्थ आपके हाथके चिन्ह आज भी उपस्थित हैं।

इस शास्त्र से आपकी अच्छी ख्याति हुई। इसमें पूर्णतया प्रवेश करने के लिये 'सामुद्रिक' की मुद्रित तथा हस्तलिखित बहुत सी प्रतियां अंग्रेजी तथा बंगला भाषा की अनेक पुस्तकें आपने एकत्र कीं। इसी लिये बँगला भाषा सीखी और अंग्रेजी पढ़ना भी प्रारम्भ किया। कुछ ज्ञान हो जाने पर अंग्रेजी की शैली सीखी। पढ़ने का तो आपको व्यसन सा हो गया था। एक दिन परिहास में आपने निम्नांकित श्लोक सुनाः—

वैयाकरणकिरातादपशब्दमृगाः क्व यान्ति संत्रस्ताः ।
ज्योतिर्नटविटगायकभिषगाननगह्वराणि यदि नस्युः ॥

बस, अब क्या था व्याकरण और काव्य की ओर आपका ध्यान आकृष्ट हो गया और कुछ लघु कौमुदी, पञ्चतन्त्र दशकुमार-चरित शकुन्तला; उत्तररामचरितादि अनेक पुस्तकें पढ़ डालीं।

एक दिन आप बैठे थे। दो विद्यार्थियों ने स्वलिखित प्रबन्ध दिखला कर प्रबन्ध काव्यों में किसके वर्णन में क्या २ लिखना चाहिये पूछा मैंने बतलाया और काव्य की पुस्तक निकाल कर उस विषय को दिखा भी दिया। ज्योतिषीजी ने कहा यह तो हमारे सामुद्रिक के लिये भी उपयोगी होगा, हम इसे नोट करेंगे उसी समय आपने उसमेंसे अपने मतलब की बातें लिख लीं जो पृ० ३२ 'नृपे विद्यानयः शक्तिः से लेकर पृ० ३४ में सेनापतौ महोत्साहः' तक इस पुस्तक में दिया गया है। कहने का भाव यह कि आपको विद्या तथा विद्वानों से अत्यन्त प्रेम था। अतएव नित्य नवीन विषय के अन्वेषण में तत्पर रहते और कुछ न कुछ प्राप्त ही करते थे।

उक्त ज्योतिषीजी ने नष्ट-जन्म-पत्र की बहुत सी सामग्री खोज निकाली और उनका अनुभव करना प्रारम्भ किया। कुछ अनुभूत विषयों को 'सामुद्रिक-रहस्य' के द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना में की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार 'सामुद्रिक कुञ्जिका' नामक नवीन पुस्तक में संग्रह किया। आपका विचार था कि इस पुस्तक में सामुद्रिक के सभी विषय ज्योतिष के निजानुभूत प्रश्न खण्ड तथा जन्माङ्ग के द्वादश भावों की संक्षिप्त तथा सरल फल कथन रीति से सर्वाङ्ग सुन्दर बनाकर अपूर्व पुस्तक रत्न प्रकाशित किया जाय।

परन्तु कराल काल से देखा न गया। अकाल में ही उसने उन्हें कवलित कर लिया।

सं० १९४३ आषाढ़ शुक्ल ७ को आपका जन्म हुआ था और सं० १९९१ शुद्ध वैशाख शुक्ल सप्तमी को आपका परलोक वास हुआ। आपने अपने गुणों से सबको मुग्ध कर लिया था। आपके औदार्य, परोपकार, विद्या-व्यसनादि सम्पूर्ण गुण सराहनीय थे। आपमें कोई दुर्व्यसन नहीं था। आपकी इस सामुद्रिक विषयक नवीन ढङ्ग की पुस्तक से हिन्दी साहित्य के एक अंश की पूर्त्ति हुई। ज्योतिषीजी यदि आज होते तो इस पुस्तक को न जाने किन किन विषयों से विभूषित कर सुसम्पन्न बनाते। तथापि आप ने इस पुस्तक के द्वारा सामुद्रिक जिज्ञासुओं का जो उपकार किया है उससे सभी चिर कृतज्ञ रहेंगे। अन्त में हमारी हार्दिक प्रार्थना यही है कि परमेश्वर परलोक में आपके अन्तरात्मा को शान्ति प्रदान करें और आपके सुयोग्य पुत्र पं० गौरीशंकर प्रसाद रा० ज्यो० को चिरायु कर अभ्युदय और ऐसेही उत्साह प्रदान करें। किमधिकमितिशम्।

ठाकुरप्रसाद द्विवेदी

अध्यापक मे० हा० स्कू० रामनगर।

इस पुस्तक की उपयोगिता

प्रिय पाठक वृन्द

जिस प्रकार कुञ्जी वन्द ताले को खोल कर गृह के भीतर जाने का मार्ग प्रदर्शित करती है। उसी प्रकार यह छोटी सी पुस्तक सामुद्रिक विषय की गुप्त बातों को प्रकट कर फल कथन प्रणाली को दर्शाती है।

यद्यपि सामुद्रिक रहस्य और सामुद्रिक दर्पण में रेखाओं के नाम, रूप, स्थान और फल बड़ी सरल रीति से स्पष्ट कियेगये हैं। उनसे रेखा परिचय और फल कथन मेंकिसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं उपस्थित होती तथापि उक्त पुस्तकों में किसके फल को कैसे वर्णन करना चाहिये इसका विस्तृत विवरण और अँगरेज तथा अरब देश वासियों के किस वर्ण से कौन जाति और किस रेखासे कौन सा फल कहना चाहिये इसका वर्णन नहीं किया गया है।

इस पुस्तक में राजा, राज महिषी, राजकुमार मन्त्री, सेनापति ज्योतिषी, न्यायाधीश, (जज्जइत्यादि) वारिस्टर, वकील, मुख्तार, शिल्पी (कारीगर) अँगरेज तथा अरव जाति के मनुष्यों की फल कथन रीति विस्तार पूर्वक वर्णित है इसके अतिरिक्त ग्रहों से फल सन्तान विचार, माप (नाप) विधान, आयु के समय का ज्ञान आयु रेखा से वर्ष का निर्णय. तिलविचार, सुख दुःख की अवधि का ज्ञान दशक-विचार, हस्तरेखा से जन्म-पत्र ज्ञान के लिये १ ग्रहस्थिति २ द्वादश-भाव ३ जन्म के नक्षत्र, लग्न, मास, पक्ष, तिथि, वार और दिन-रात के ज्ञान की विधि का वर्णन तथा केवल जन्म कुण्डली से शकादि के ज्ञान की रीति दर्शायी गयी है। इसमें एक विशेषता यह है कि कुछ चक्रों के द्वारा सातों ग्रहों के भूत, भविष्य और वर्तमान कालिक नक्षत्रों राशियों और वक्री-मार्गी गतियों का ज्ञान सिद्धान्त रीति के अनुसार होता है। जिससे नष्ट जन्म पत्र वनाने और सुख-दुःखादि फल कहने में बड़ी सुगमता

प्राप्त हो सकती है किंबहुना इस पुस्तक की उपयोगिता इसके देखने से ही ज्ञात हो सकती है। इस पुस्तक में लेखक ने गुरु कृपा प्राप्त विषय तथा सामुद्रिक और ज्योतिषादि अनेक ग्रन्थों से निजानुभूत विषयों का संग्रह किया है। अतः इस लेखक की ओर से मैं उन ग्रन्थों के रचयिताओं को हार्दिक अनेक धन्यवाद प्रदान पूर्वक उनकी कृतज्ञता प्रकाशित करता हूँ।

कार्य बाहुल्य होने के कारण कभी २ एक बारही प्रूफ़ देखकर छपने की आज्ञा दे दी जाती थी। अतः दृष्टि दोष तथा असावधानी से अनेक स्थानों में कुछ अशुद्धियाँ रह गयी हैं, और बहुत स्थानों में टाइप नहीं उठे हैं उन सबों को यथा सम्भव शुद्धिपत्र में प्रकाशित किया जाता है परन्तु पदच्छेद और इसके अतिरिक्त जो कोई अशुद्धि प्रमाद से रह गयी हो उसके लिये पाठकों से विनम्रनिवेदन है कृपया सुधार कर पढ़ें। और यदि कृपया सूचित करने का कष्ट उठावेंगे तो सधन्यवाद उसका सुधार अगले संस्करण में कर दिया जायगा।

इस पुस्तक की प्रति लिपी करने और प्रूफ़ देखने के समय हमारे कुछ विद्यार्थियों ने सहयोग दिया है और कभी २ हमारे स्कूल के पं॰ सीतारामजी उपाध्याय ने भी सहायता दी है अतः मैं उनको अनेक धन्यवाद देता हूँ और ग्राहकों तथा प्रकाशक से विलम्ब के लिये क्षमा की प्रार्थना करता हुआ अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

* इति शम् *

ठाकुरप्रसाद द्विवेदी,

अध्यापक मे॰ हा॰ स्कूल।

अथ सूचीपत्र

इति ।

अथ शुद्धि-पत्रम् ।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति
कुञ्चिका	कुञ्चिका	१ —४
„	„	२ -१-२
श्रेणी का	श्रेणी के	३०—२२
पुरुषां	पुरुषों	३०—२७
हस्ताङ्कुला	हस्ताङ्कुली	३०—२९
धत्रिय	क्षत्रिय	३१—१८
सयनानुकूल	समयानुकूल	„—२३
म न्त्रिः	मन्त्री	३३—१३
भलीभाँत	भलीभाँति	३७—६
पव	पर्व	„—११
स्पश	स्पर्श	३८—१
निम्न	निम्न	३९—२७
अभिलाषा	अभिलाषा	४०—२
गुप्तविद्याओं	गुप्तविद्याओं	„—१६
इत्थादि	इत्यादि	„—१६
मुक्त	युक्त	„—२७
उत्पति	उत्पत्ति	४१—२१
दुरूरी	दूसरी	४३—१२
वष	वर्ष	„—२८
अन्व	अन्य	४७—२
नष्ठ	नष्ट	„—२५
कथमति	कथयति	४८—६
दुःखार्ति	दुःखार्ति	„—१२
गजयोग	राजयोग	„—१६
शीर्ष	शीर्षं	५१—४
स्त्रिंशत्प	स्त्रिंशत्प	„—१३
स्त दङ्कूल्या	स्तदङ्गुल्या	„—१५
कानष्ठिका	कनिष्ठिका	५२—२८
ऋक्षाणि	ऋक्षाणि	„—२३
त्रिपर्वेषु	त्रिपर्वसु	५३—१६
तिथि	तिथी	५७—२३

कागज पर हस्तरेखाओं के छापने की विधि

कुछ कर दर्शकों का कहना है कि हाथ की फोटो वा छाप लेकर तब फल कहना चाहिये। बिना छाप लिये रेखाओं का समुचित विचार नहीं हो सकता। क्योंकि करस्थ सूक्ष्म रेखाओं से आकृति का यथार्थ ज्ञान न होने से भ्रम उत्पन्न हो जाता है। जिससे फल उत्तम नहीं घट सकता।

इससे एक लाभ और हो सकता है कि दूर देशस्थ मनुष्य भी अपने हाथ का छाप लेकर किसी भी सामुद्रिक वेत्ता के पास भेज कर फल मँगा सकता है। अतः उसकी युक्ति लिखना आवश्यक जान पड़ता है। इस कारण कर छाप की विधि नीचे दर्शायी जाती है।

विधि

यद्यपि इसकी बहुत सी रीतियां हैं तथापि एक बहुत सरल रीति जो सर्व साधारण को प्रत्येक समय सुविधा जनक होगी बताई जाती है।

१० इञ्च का चौकोर मोटा सा लकड़ी का टुकड़ा लेकर उसको बीच में कुछ उठा हुआ और चारों ओर कुछ नीचा ढालुआ और चिकना ऐसा बना लेना चाहिये कि जिस पर हाथ रखने से बीच की हथेली तथा पाचों अंगुलियों की सम्पूर्ण रेखायें साफ-साफ अच्छी तरह आ सकें। अनन्तर उसको साफ और कोमल कपड़े को कई तह करके ढाँक दो। तदन्तर एक टुकड़ा मुलायम कागज ले लो और कर्पूर जलाकर उसके धूम से काला कर लो फिर उस कागज को उसी कपड़े से ढके लकड़ी के टुकड़े पर रख दो और उसपर इतने जोर से अपना दाहिना हाथ रखकर दबाओ कि अंगुलियों सहित हाथ की सम्पूर्ण रेखायेँ उठ आयें। इसके बाद बड़ी साव-धानी से हाथ जमाकर पेन्सिल से हाथ और अंगुलियों की पूर्ण आकृति बना लो और तब धीरे से हाथ को उठा लो जिससे रेखा न

विगड़ने पावें। इसी रीति से दूसरे काले कागज पर बायें हाथ की भी छाप लेकर इन दोनों छाप लिये कागजों पर फिक्सिटिव नामक वारनिस को छींटा किसी कांच की नली से दे दो जिससे कि चिरस्थायी सुन्दर छाप आ जायगी। यह वारनिस प्रायः पेन्सिल अथवा कोयले से तसवीर बनाने वाले रखते हैं उनसे समझाकर लेना चाहिये।

अथवा—कोई भी छापने की स्याही वा अन्य स्याही जिसमें चटचटाहट न हो किसी रूलर से हाथ पर इस प्रकार लगाना चाहिये जिससे अंगुली तथा मणिवन्धादि सहित सम्पूर्ण हाथ की रेखायें आ सकें कहीं अधिक या कम स्याही न हो फिर उसी पूर्वोक्त कपड़े से ढके लकड़ी के टुकड़े पर कोमल कागज रखकर धीरे से हाथ रक्खो और ऐसा दबाओ कि अंगुष्ठ तथा अंगुलियों सहित मणिबन्ध तक पूरी हाथ की छाप आ जाय और पूर्ववत् पेन्सिल से अंगुली सहित दोनों हाथ की आकृति बनाकर काम में लाना चाहिये॥ इति॥
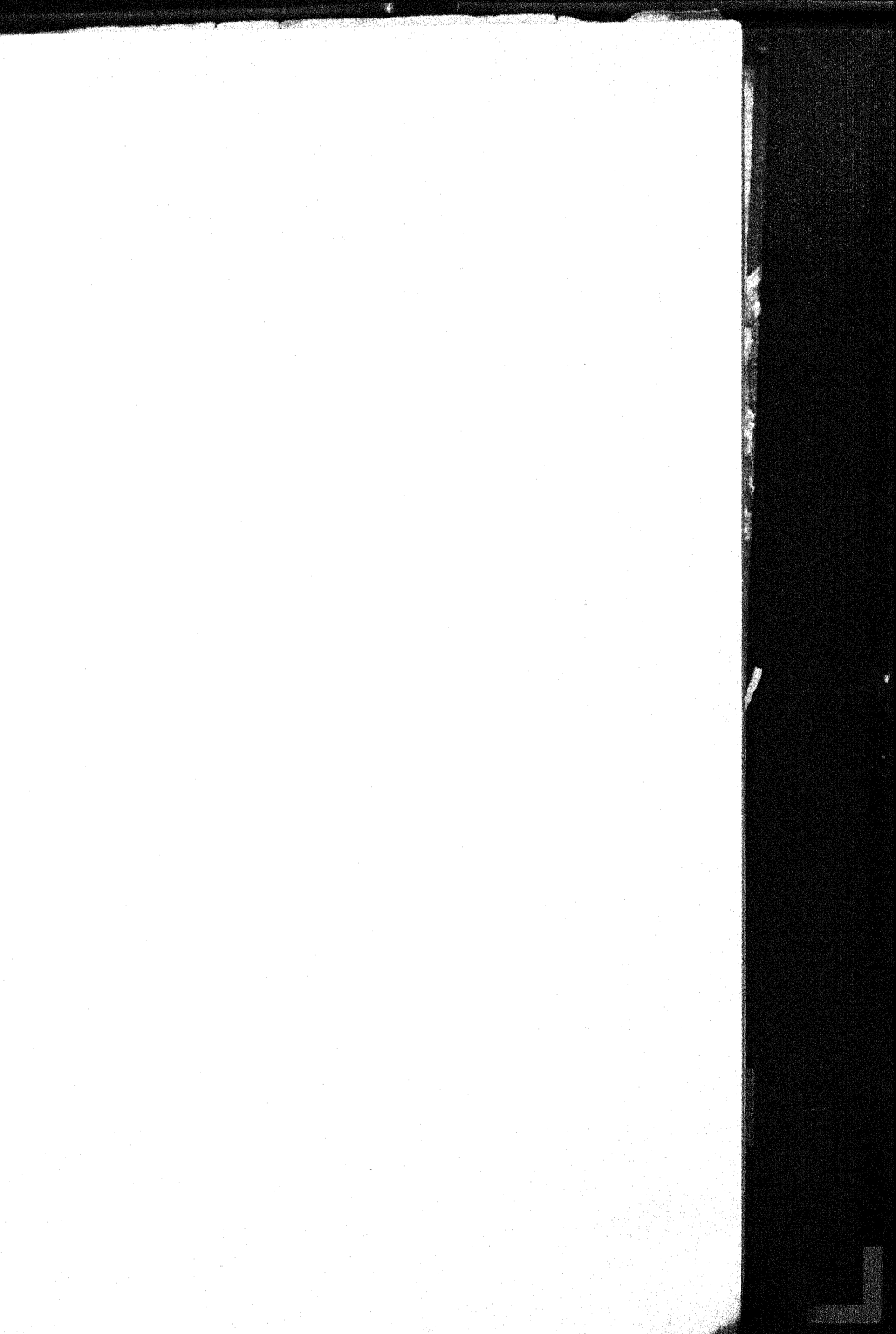
स्वर्गीय श्री पं० कालिकाप्रसाद राज ज्योतिषी
रामनगर, बनारस स्टेट ।
जन्मः
सं० १९४३ आषाढ़ शुक्र ७
ता० ९ जुलाई सन् १८८५ ई० ।
मृत्युः
सं० १९९१ वैशाख शुद्ध शुक्र ७
ता० १९ मई सन् १९३४ ई० ।

॥ श्रीरामः ॥

श्रीमङ्गलमूर्तये नमः ॥

श्री १०८ कामाख्यायै नमः ॥

* अथ सामुद्रिक-कुञ्चिका *

गिरिजाशङ्करौवन्दे कृष्णं विष्णुं सदा गुरुम् ॥
गणेशं शारदां दुर्गां सावरीञ्चार्थकारिणीम् ॥ १ ॥

१ श्रीगणेशाय नमः
२ श्रीशारदायै नमः
३ श्रीलक्ष्म्यै नमः
४ श्रीदुर्गा देव्यै नमः
५ श्रीकालिकायै नमः
६ श्रीकार्तिकेयाय नमः
७ ॐ ब्रह्मभ्यो नमः
८ ॐ अग्नये नमः
९ ॐ सीतारामलक्ष्मणेभ्योनमः
१० श्रीभरताय नमः
११ श्रीशत्रुघ्नाय नमः
१२ श्रीहनुमते नमः
१३ श्रीराधाकृष्णाभ्यान्नमः
१४ श्रीन्द्राय नमः
१५ श्रीमद्गुरवे नमः
१६ ॐ पितृभ्यो नमः
१७ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
१८ श्री १०८ कामाख्यायै नमः
श्री १०८ कामाख्यायै नमः
श्री १०८ कामाख्यायै नमः
दे० य०)॥ त्रिसरिता
१९ श्रीगङ्गादेव्यै नमः
२० श्रीकृतान्तभगिन्यै नमः
२१ श्रीसरस्वत्यै नमः
२२ श्रीत्रिपुरसुन्दरीपञ्चभगि-
नीसहित श्रीकालिका-
देव्यै नमः
२३ श्रीनवग्रहेभ्यो नमः
सू० चं० मं० बु० बृ० शु०
श० रा० के०
२४ श्रीमहेश्वराय नमः
२५ ॐ नमः शिवाय

सामुद्रिक-कुञ्जिका

यह सामुद्रिक कुञ्जिका नामक पुस्तक सामुद्रिक शास्त्र के गूढ़ विषयों की कुञ्जी है। सामुद्रिक-सोपान, सामुद्रिक-दर्पण, तथा सामुद्रिक-रहस्य या अन्यान्य सामुद्रिक शास्त्र के जो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं वे सब अङ्गूठी हैं और यह उसका बहुमूल्य नगीना (मणि) है। विद्वान् लोग अनुभव द्वारा इस रहस्य का आनन्द प्राप्त करेंगे किमधिकम्।

अथ चक्रविवरण।

निम्नलिखित चक्रों के द्वारा भौमादि सात ग्रहों के सैकड़ों वर्षों के भूत भविष्य तथावर्तमान काल के नक्षत्रों राशियों तथा वक्री और मार्गी गतियों का सिद्धान्त रीति से परिज्ञान होता है। यह नष्ट-जन्म-पत्र तथा मनुष्योंके दुःख सुख की अवधि इत्यादि फल कथन में अत्यन्त उपयोगी विषय है।

देखने की रीति।

विक्रम सम्वत् में १३५ घटा देने से शालिवाहन शाका होता है। शाका में १३३० घटाने से जो अङ्क शेष रहै, उसमें ग्रहोंकी ध्रुवा से भाग लेने पर जो शेष बचै उन ग्रहों के उन चक्रों में उस शेषाङ्क के सामने जिस मास में देखना हो उस कोष्ठ के अङ्क से अश्विन्यादि नक्षत्रों का ज्ञान होता है। उससे राशि बना लेना चाहिये। वक्री ग्रहके कोष्ठमें प्रायः "व" लिखा है।

ध्रुवाः—

मं० ७९। बु० ४६। बृ० ८३। शुक्र ८। शनि ५९। रा० ९३। केतु राहु के ६ राशि आगे रहता है।

उदाहरणः-

जैसे सम्बत् १९४२। आषाढ़ शुक्ल ७।१८।४४ इष्ट पर हस्तनक्षत्र के तृतीय चरणमें हमारा जन्म हुआ है। अब देखना चाहिये कि इस समय बृहस्पति शनि तथा राहु किन २ राशियों पर हैं।

सं० १६४३ में १३५ घटानेसे (१८०८) शालिवाहन शाका हुआ इस (१८०८) में १३३० घटाने पर ४७८ शेष बचता है। इसमें गुरुके ८३ ध्रुवासे भाग लेने पर ६३ शेष बचता है। गुरुके चक्रमें ६३ के सामने आषाढ़ मासके सीधमें १३ अङ्क है। अश्विनीसे गणना करने पर १३ वाँ हस्त नक्षत्र आता है। इससे कन्या राशि हुई। अब यह विदित होगया कि उस समय गुरु कन्या राशि पर थे।

इसी रीतिसे शेष ४७८ में ५९ से भाग लेने पर शनि और ९३ बे से भाग लेने पर राहुके नक्षत्र और राशिका ज्ञान हो जायगा कि उस समय शनि मिथुन और राहु सिंह राशि का था। इस प्रकार इन चक्रोंके द्वारा शीघ्र नक्षत्र तथा राशिजानी जाती है। इति०
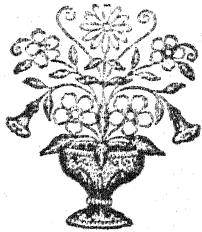
भौम चक्रम्

	१	२	३	४	५
चैत्र	२५।५।२२	८	२७।२१	८।१४	२
बैशाख	२।१८।२६	९ २२	२	१०	२।४
ज्येष्ठ	२।१३।३२	१०	८	१०।२४	४।२९।६
आषाढ़	४।१९	११।८	८।११	१३।१५	६
श्रावण	५।८।३०	१३।२१	६ २५	१५	६ ३
भाद्रपद	७।२१	१५	८	१५।१०	८।१९
आश्विन	८।१६	१५।१८	८।१५	१६।८२	१०
कार्तिक	९।२३	१८।१४	१०	२०	१० १२
मार्गशीर्ष	१० १५ व	२०।२४	१०।४ व	२२।१२	१३
पौष	९।	२२	९।२३	२४।१६	१३
माघ	९।२ व ८	२२।४	१०	२४।२७	१३
फाल्गुन	८	२४।१४	१०	२७।१९	१३

भौम चक्रम्

	६	७	८	९	१०
चैत्र	१३	२।२६	१८	२।१	२०
बैशाख	१३	४	१८	४।१५	२०।४
ज्येष्ठ	१३।२६	४।४	१८	६।२८	२२
आषाढ़	१५	६।१२	१८	८	२२।९ व
श्रावण	१५।१०	८।२९	१८।२१	९	२२
भाद्रपद	१८।२७	१०	२०	११	२२
आश्विन	२०	१० १८	२०।१०	१२	२२
कार्तिक	२०।८	१३	२२।२३	१३	२३
मार्गशीर्ष	२२।१८	१३।११	२४	१५	२४।६।१९
पौष	२४	१५	२४।६	१६	२७
माघ	२७	१५।१८	२७।२०	१७	१
फाल्गुन	२७।१९	१८	१।१५	१९	२ ११ २७

भोम चक्रम्

	११	१२	१३	१४	१५
चैत्र	४।२७	२२	५	२३ १५	१
वैशाख	६	२४	६।१	२५	६।३
ज्येष्ठ	६।२२	२५	८	२७ २०	८।११
आषाढ़	८।२६	२७	९	१	१०।९
श्रावण	१०	२७	११	१।१५	११।६
भाद्रपद	११	२७	१२	३	१३।१९
आश्विन	१३	२७	१४	४	१५
कार्तिक	१४	२७	१५।२७	४	१५।२।२७
मार्गशीर्ष	१६	२७ ५	१७	४	१८।४
पौष	१७।४	१	१८।६	४	२० २४
माघ	१९	२ ३	२०।१८	४	२१।२
फाल्गुन	२०।१४	४	२२।१८	५।११	२३।३

भौम चक्रम्

	१६	१७	१८	१९	२०
चैत्र	२५	८	२६।१०	९	२७ २०
वैशाख	२६।१	९।१	२७।१	१०	२।१४
ज्येष्ठ	२	१०।१९	२।१५	१०।१९	४।२९
आषाढ़	३	११।१९	४।८	१२	५।५
श्रावण	४।१३	१३।१	६	१३	६।१२
भाद्रपद	६	१४	७।५	१३।१	८ २९
आश्विन	६ १६	१५।१०।२५	[illegible]	१५।१।२७	१०
कार्तिक	८	१८।२	१०	१८।१०	११
मार्गशीर्ष	८।१५ व७	१९।२०	११	२०।१८	१२
पौष	७	२१।२	११	२२।२२	१३
माघ	७	२२।२४	१०	२४।२।२९	१३
फाल्गुन	७	२४।१८।२८	१० व	२७	१२।३ व

भौम चक्रम्

	२१	२२	२३	२४	२५
चैत्र	१२	१।३	१६	२।१८	१९
वैशाख	१२	३	१५	४।२३	२०
ज्येष्ठ	१३	४।१०	१५	६	२०
आषाढ़	१३।१२	६।१८	१५।९	७	१९
श्रावण	१५।१।५	८	१७	८ १०	१९
भाद्रपद	१७	८।२४	१८।९	१०	२०।१०
आश्विन	१८।७	१०।२४	२०	११।६	२२
कार्तिक	२०।१८	१२	२१।	१३	२३
मार्गशीर्ष	२१।२९	१३।२०	२२।२३-	१४	२४।२३
पौष	२३।२०	१४	२४।२३	१६	२६
माघ	२५।१०	१५	२६ १९	१७	२७.५
फाल्गुन	२७।२५	१६	१	१८	२।२०

भौम चक्रम्

	२६	२७	२८	२९	३०
चैत्र	३	२२	४।१५	२२।९	६
वैशाख	४।५	२३।२०	६।२५	२४।२२	६।१२
ज्येष्ठ	६।८	२४	८	२६	८।२९
आषाढ़	८।।३	२५	८।१५	२७।१०	१०
श्रावण	१०	२५	१०।।२	२	११।२५
भाद्रपद	११।५।२२	२५	१३।	३	१४
आश्विन	१३	२५	१३।१५	३ ब	१४
कार्तिक	१३।५	२५	१५।२८	३	१५।१
मार्गशीर्ष	१५।२४	२६।१५	१६।२०	३	१७
पौष	१७	२७।१	१८।९	३	१९।१५
माघ	१८।१०	२।१८	२०।२७	४	२१
फाल्गुन	२०।२८	३	२२	४।२२	२२

भौम चक्रम्

	३१	३२	३३	३४	३५
चैत्र	२४।२२।३०	६।२४	२५।६	६	२७
वैशाख	२७	८	२७।६	६।१५	१।१८
ज्येष्ठ	१	८।१०	२।१६	११	३
आषाढ़	२॥२४	१०।१५	४	१२	४।७
श्रावण	४	१२	५	१३।२७	६।२१
भाद्रपद	४ ४	१४	६।२६	१५।१६	८
आश्विन	६	१५।२६	८	१७।२५	८।३
कार्तिक	७	१७	६	१८।६	१०।१२
मार्गशीर्ष	७	१८।१	१०	२०।२०	१२
पौष	६	२०।१२	१० ब	२१ २६	१२
माघ	६	२२।२२	६	२४	१२
फाल्गुन	६	२४	६	२४।६।२७	११

भौम चक्रम्

	३६	३७	३८	३९	४०
चैत्र	११	१ २०	१४	२।१८	१८
वैशाख	११	२।७	१४	४	१८
ज्येष्ठ	१२	४।१७	१४।१५	५।६	१८
आषाढ़	१३	६	१५	७	१८
श्रावण	१५	७	१५।६	८।२६	१८
भाद्रपद	१६।६	८।१५	१७।२१	१०	१६।१०
आश्विन	१८	१०	१६	११।१५	२१
कार्तिक	१६।२७	११।२७	२०।२	१३	२२।१६
मार्गशीर्ष	२१	१३	२२।१५	१८।६	२४
पौष	२२।८	१४	२४।२५	१६	२४।१२५
माघ	२४ १७	१५	२६	१६	२७
फाल्गुन	२६।२७	१५।२२ ब	२७।७	१७	१।१५

भौम चक्रम्

	४१	४२	४३	४४	४५
चैत्र	३ १०	२०।१६	४।१३	२२।६	५।४
वैशाख	४ १	२०।२०	६	२४	७
ज्येष्ठ	६।१५	२३ व	६।८	२५।।२	८
आषाढ़	८	२३	८।२२	२७	९
श्रावण	८।९।१७	२३	१०	१	१०।२४।३०
भाद्रपद	१०।१।२४	२३	११।७	२	१३
आश्विन	१३	२२।१२	१३।२२	२	१३।३
कार्तिक	१३।१२	२४।७	१५	१	१५।१७
मार्गशीर्ष	१५।२०	२६।२२	१६ ८	१	१७।७
पौष	१६ २५	२७ १४	२८	२	१९
माघ	१८।२०	१।६	१९।८	२।९	२०
फाल्गुन	२०	३	२१।३०	४	२२।२२

भौम चक्रम्

	४६	४७	४८	४९	५०
चैत्र	२४ १५	७ २५	२५।९।२६	८।९	२६।२२
वैशाख	२६	८	२७।१३	९	१
ज्येष्ठ	२७ २०	९	१।१	१०।९।३२	३।१५
आषाढ़	२	१०	३।६।२५	११	४।२
श्रावण	३	११ १	५।१४	१३।२३	६।१०
भाद्रपद	५	१३।१७	६।४	१४।१२०	७।१।२४
आश्विन	६	१५	७।१	१६	९
कार्तिक	६।२ व	१७	८।५	१८।१६	१०
मार्गशीर्ष	५	१८।६	९	१९।२१	११
पौष	५	२० १३	९	२१।२७	११
माघ	५ ४	२२ २०	८ व	२३।१३	११।१४ व
फाल्गुन	६	२४	८ व	२४।२	१० व

भौम चक्रम्

	५१	५२	५३	५४	५५
चैत्र	१० व	२७।२।२१	१३।८।२२ व	२।१६	१७
वैशाख	१० व	२।८	१२ व १६	३।७	१७
ज्येष्ठ	११।३०	४।१४	१३।२०	५।१३	१७।१व१६।२६
आषाढ़	१३	९	१४।१९	६।२१	१७
श्रावण	१४।१०।३०	७।३१	१९।९।२१।२६	८।११	१०।२,२७
भाद्रपद	१६।१३	३	१७।१४	३।१।२२	१३।१७
आश्विन	१७।७	१०	१८।२,२०	११।१४	२०।८।२५
कार्तिक	१३।१४	११	२०।९।१४।२६	१२।६	२२।१४
मार्गशीर्ष	२०।२।१३	१२	२५।१४।३०	१३।१।२५	२३।२।२०
पौष	२२।६।२३	१३	२४।१८	१५।२३	२९।३।२७
माघ	२४।११।	१४	२९।६।२३	१६	२७।१६
फाल्गुन	२६।१५	१३ व	२७।१२।३०	१६।१।२६व१७	१।६।२४

भौम चक्रम्

	५६	५७	५८	५९	६०
चैत्र	३।१६	२०।२७	४।१६	२२	४।१।१४
वैशाख	४।६।२६	२१	९।९	२३।५।२४	६।५।२६
ज्येष्ठ	६।१४	२१	७।१९	२९।१३	८।१७।
आषाढ़	७।४।२४	२१।६ व २०	८,२९	२६।६	३।६।२७
श्रावण	६।१२	२०।२३	१०।१९	२७।१३व २६	११।१७
भाद्रपद	१०।२।२४	२१।२२	११।५।२६	२६	१२।७।२७
आश्विन	१२।१९	२२।१३	१३।१६	२६	१४।१६
कार्तिक	१३।६।२८	२३।७।२७	१४।६।२७	२६।२२	१९।६।२६
मार्गशीर्ष	१५।२०	२९।१७	१६।१७	२७।२०	१७।१६
पौष	१६।१३	२६।६।२४	१७।८।२८	१।१९	१८।६।२९
माघ	१७,६।२६	१।१६	१६।१६	२।८	२०।१३
फाल्गुन	१६।२८	२।६।२६	२०।१०।३०	३।२	२१।१।१४

भौम चक्रम्

	६१	६२	६३	६४	६५
चैत्र	२३।७,२९	६।१२	२४।१३।१८	७।५	२६।१३
वैशाख	२५।१२।३०	७।४।२७	२६ ४।२१	८।२।२६	१।१७
ज्येष्ठ	२७।१७	३।१८	१।६।२७	१०।१६	२।९।२३
आषाढ़	१।४।२५	१०।८।३०	३।१४	११।६।३०	४।१०।३०
श्रावण	३।१५	१२।१८	४।४।२७	१३।२०	६।१६
भाद्रपद	४।१४	१३।८।२८	६।१८	१४।६।२६	७।१०
आश्विन	५।१४।व४	१५।१४	७।१३	१६।१७	८ ४।२६
कार्तिक	४।२३।व३	१६ ७।२६	८	१७।५।२४	१०
मार्गशीर्ष	३	१८।१४	८।१६व७	१६।१२।३०	१०
पौष	३	१६।३।२१	७।२६।व६	२१,२७	१०
माघ	४।२१	२१।१०।२७	६।२३	२२।५।२२	१०।१२व६
फाल्गुन	५।१८	२३।२४	७	२४।६।२९	६

भौम चक्रम्

	६६	६७	६८	६९	७०
चैत्र	६	२७।६।७	११व३१	१।७।२६	१९व३१व१४
वैशाख	१०।१२	२।१४	१२	३।१३।३२	१४ व
ज्येष्ठ	११।१६	३।१।२०	१२।८	९।१६	१४ व ८
आषाढ़	१२।८	९।८।२८	१३।२।२६	६।८।२७	१५।१२
श्रावण	१४।१४	७ १८	१९।१६	८।१८	१६।६।२७
भाद्रपद	१५।७।२६	८।८।३०	१६।४।२४	६।३०	१८।१७
आश्विन	१७।१३	१०।२३	१८।२१।२६	११।२२	१६।५।२३
कार्तिक	१८ ४।२१	११।२०	२०।२३	१२।१५	२१।११।२६
मार्गशीर्ष	२०।६।२७	१२।२४	२१।५।२३	१३।११	२३।१७
पौष	२२।१४	१३	२३।११।२८	१४।६	२४।६।२३
माघ	२३।२।१६	१३।१६व१२	२९।१९	१५।२२	२६।६।२६
फाल्गुन	२५।६।२३	१२।१५व११	२६।२।२०	१६।१७व१५	१।१७

भौम चक्रम्

	७१	७२	७३	७४	७५
चैत्र	२।५।२४	१६	३।४।२४	२१।१६	४।२।२३
वैशाख	४।१२	१६	५।१३	२२।५।३०	६।१३
ज्येष्ठ	५।२१	१६।३२ व	६।१।२२	२४	७।३।२४
आपाढ़	७।६।३०	१८ व	८।१२।३२	२४।११।२७व२४	६।२३
श्रावण	६।१६	१६।२७	१०।२१	२४	१०।३।२४
भाद्रपद	१०।१०।३१	२०।२०	११।११	२४	१२।१४
आश्विन	१२।२२	२१।१२	१२।२।२३	२४।२२	१३।३।२४
कार्तिक	१३।१४	२३।	१४।१४	२५।२०	१५।१४
मार्गशीर्ष	१४।७	२४।६।२८	१९।९।२६	२६।१४	१६।५।२४
पौष	१५।१६।२९	२६।१६	१७।१६	२७।६।२८	१८।१५
माघ	१७।२०	२७।२५	१८।६।३०	२।२०	१६।४।२२
फाल्गुन	१८।२१	२।१४	२०।२१	३।१२	२१।११।२८

भौम चक्रम्

	७६	७७	७८	७९	
चैत्र	२३।१८	६।२२	२४।१०।२६	७।१६	
वैशाख	२४।६।२४	१।१४	२६।१४।३२	८।१३	
ज्येष्ठ	२६।१३	८।३।२५	१।१८	६।९।२७	
आषाढ़	२७।२।२५	१०।१६	२।६।१७	११।१७	
श्रावण	२।२७	११।५।२६	४।१४	१२।७।२७	
भाद्रपद	३।२२।३	१३।१८	९।९	१४।१७	
आश्विन	३।११व२	१४।९।२९	६।२	१५।९।२४	
कार्तिक	२ व	१६।१४	७।२६व६	१७।१३	
मार्गशीर्ष	२ व	१७।३।२२	६।२८व५	१८।२।२०	
पौष	२।६	१६।११।२६	५	२०।६।२६	
माघ	३।१०	२१।१८।२६	५।१४	२२।१३।३०	
फाल्गुन	४।६।२८	२३	६।१२	२४।१७	

सौम्य चक्रम्

	१	२	३	४
चैत्र	२७|७|१४|२१|२४	१|८|१३|२२	२|६	२|१४|व१
वैशाख	४|८|१६	४	३|१६व२|२०,३१	१|७|१७|२४|३२
ज्येष्ठ	६	४|१३|२२|३०	४|८|१६|२३|३०	८|७|१४|२१|२८
आषाढ़	६|६|१४|२१|२६	७|५|१३|२०|२७	८|५|१०|२१|३०	६|६|१७
श्रावण	१०|४|११|१९|२८	११|४|१४	१२|२८व११	११|४व१०|२६
भाद्रपद	१३|११ २०व१४	१३	११|१२|१४	११|१०|१६|२४
आश्विन	१४|२९	१३ ८ १७ २५	१३|२|१०|१७|२९	१४|२|१७|२६
कार्तिक	१९|३|१२|१८|२७	१६|४|३२|१९|२८	१७|३|११|२२	१८
मार्गशीर्ष	१६|५|१३|२२	२०|८	२०|१६व१६	१८|२३
पौष	२२	२१|९व२०|२२|२६	१६|६|२०|२८	१६|२|२०|२७
माघ	२२|२०,२८	२२|१३|२१|२६	२२|६|१३|२१|२८	२२|६|१३|१८|२२
फाल्गुन	२५|६|२३	२९|६|१३|२२|२८	२६|६|२५|२८	२६|१|२६व

सौम्य चक्रम्

	५	६	७	८
चैत्र	२६|१३|२५	२९|३|११|१८	२६|३|११|१८|२९	२७|३|१०|१७,२९
वैशाख	१|३|१०|१७|२४|३१	२|१|८|१६|२३|३१	३|१|८|१७|२८	४|४
ज्येष्ठ	६|६|१४|२३	७|१०	७	९|२९
आषाढ़	६|६	८|५व७|१६	६|८ १७	६|३|१०|१८|२९|३२
श्रावण	१०|२४	८|६|१७|१२	६|२|६|२४	११|८|१३|२६
भाद्रपद	११|१|६|१६|२४	१२|१|१२|१७|२६	१३	१४|२३व१३
आश्विन	१६|११|२२	१६	१४	१३|१०|२१|३०
कार्तिक	१८|४व१७	१६|२२	१९|०|०|२४	१६|८|१६|२४
मार्गशीर्ष	१७|११|१८|२६	१७,२|१०|१८|२६	१८|०|१०|८	१६|२|१०|२१
पौष	२०|४|१२|२०|२९	२१|७|१२|२२	२२ ६	२२|१९व२१
माघ	२४|६	२४	२३	२१|७|१८|२६
फाल्गुन	२५|३१	२४|१६|२६	२३|०|११|१६	२४|४|११|१८|२९

सौम्य चक्रम्

	९	१०	११	१२
चैत्र	१।३।१९।२२	२	१	२६।१३।२२।३०
वैशाख	४।३ व ३	२।१३।२८	१।५।१४।२१।२८	२।७।१४।२१।२८
ज्येष्ठ	३।१।११।१६।२७	४।५।१२।१६।२६	५।४।११।१६।२७	६।३।१२।२२
आषाढ़	७।३।१०।१७।२९	८।२।६।१८	६।९	६।१३।व ८
श्रावण	११।१।१३।३१व १२	११।७ ६व११	१०।२८	८।२।१२।२१।२६
भाद्रपद	१२।३०	११।१२।२१।२६	११।६।१४।२१।२९	१२।९।१३।२०।२९
आश्विन	१३।६।१४।२४।३०	१४।६।१४।२१।२९	१९।५।१३।२४	१६।६
कार्तिक	१६।८।१६।२९	१८।६	१८।२८व१७	१७ ७व१६।२३
मार्गशीर्ष	२०।७।२५व२०	१६	१७।७।२१	१७।५।१४।२२
पौष	२०।२२	१६ ८।१७।२९	१६।१।६।१७।२४	२०।१।८।१६।२४
माघ	२१।२।१०।१८।२९	२२।३।१०।१७।२९	१३।२।१०।१६	२४।९
फाल्गुन	२९।३।११।२८।२७	२६।३।१४	२६।४।११व२६	२९

सौम्य चक्रम्

	१३	१४	१५	१६	१७
चैत्र	२६।८।१६।२३।३०	२७।७।१४।२१।२९	१।३।१४।२३	२।१२	२
वैशाख	३।६।१३।२१।३०	४।६।१५	५।१७।व४	३	१
ज्येष्ठ	७	६।१३व९।२६	४।१४।२३।३०	३।१०।१६	५
आषाढ़	७।२०।३०	६।६।१४।२२।२६	७।७।१४।२१।२६	८।१३	६
श्रावण	६।६।१३।२०।२८	१०।६।१३।२१।२९	११।६।१९	१२	११
भाद्रपद	१३।९।१४।२४	१४।११।२६व१४	१३	१२	११
आश्विन	१६।१८।व१५	१४।२३	१३।६।१८।२७	१३।६।२४	१४
कार्तिक	१५।६।२०।२६	१९।४।११।२०।२८	१६।४।११।२०।२८	१०	१८
मार्गशीर्ष	१८।७।१४।२२	१६।६।१४।२३	२०।६	२०।१०	१८
पौष	२१।१।६।२१	२२।८।२१व२२	२१	२२	१६
माघ	२४।१२व२३	२२।२०।३०	२१।६।१९।२३।३०	२४।६।२९	२३
फाल्गुन	२३।५।१५।२३	२४।८।१९।२२।२८	२९।७।२५।२२	२७।१५	२७

सौम्य चक्रम्

	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
चैत्र	२७	२६	२६	२७	१	२	१	२६	२६	२७	२७
वैशाख	१	२	३	४	४	२	१	२	३	४	४
ज्येष्ठ	६	७	७	५	३	५	५	६	७	६	४
आषाढ़	९	८	६	६	७	८	९	९	७	६	६
श्रावण	९	८	९	१०	११	१२	१०	८	९	१०	११
भाद्रपद	११	१२	१३	१४	१३	११	११	१२	१३	१	१४
आश्विन	१६	१६	१६	१३	१३	१४	१६	१६	१६	१५	१३
कार्तिक	१८	१६	१६	१५	१६	१७	१८	१७	१५	१५	१६
मार्गशीर्ष	१७	१७	१८	१९	२०	२०	१८	१७	१४	१९	२०
पौष	२०	२१	२२	२२	२०	२०	१९	२०	२२	२२	२२
माघ	२४	२४	२३	२१	२१	२२	१३	२४	२४	२२	२३
फाल्गुन	२६	२४	२३	२४	२५	२५	२६	२६	२३	२३	२४

सौम्य चक्रम्

	२९	३०	३१	३२
चैत्र	२	२	२७	२६।१।२७
वैशाख	३	२।८।२६	१।२।२०	२।३।१०।१७
ज्येष्ठ	३।१।१०।१७।२६।३२	४।३।२४।३१	६।८।१६।२६	९।१०
आषाढ़	८।७।१७।२२।३१	९।१७	९	८
श्रावण	१२	११	९।२६	८।२।१९
भाद्रपद	१२।६	११।९।१८।२६	११।३।११।१८।२७	१२।३।१०।१८
आश्विन	१३।४।११।१९।२७	१४।३।११	१६।१२।२३	१६
कार्तिक	१७।४	१८,८	१८।४त्र	१६।२४
मार्गशीर्ष	२०	१९	१७।९।२९	१७।४।२७
पौष	१९।७।२१।३०	१९।५।१४।२९।२३	२०।६।१४।२१।२९	२१।६।१२।२३
माघ	२२।८।१९।३०	२२।०।८।२१	२४।८।१८	२४
फाल्गुन	२६।८	२९।२।८	२६	२४।१८।२८

सौम्यचक्रम्

	३३	३४	३५	३६
चैत्र	२६।८।१३।१८।२७	२७।८।१२।१९।२७	१।६।१५।२३	२।१०।२५व२
बैशाख	३।३।१४	४ ४।१७।२८।५	४	२।२२।३०
ज्येष्ठ	७	५।२७	४।१४।२२	४।७।१४।२१।२८
आषाढ़	७	६।८।१२।२०।२७	७।६।१३।२०	८।३।११।१९।३०
श्रावण	६	१०।२।१०।१८।२७	११।४।१३	१२।८ व
भाद्रपद	१३	१४	१३	११।१२।२३
आश्विन	१५	१४।१३	१३।६।१७।२७	१३।१।६।२७।२४
कार्तिक	१५	१५।२।८।१०।१८	१६।४।११।१९।२७	१७।२।११।२३
मार्गशीर्ष	१८	१६।४।१९।२३	२०।७	२०।११ व
पौष	२२	२२	२१	१६।८।१६।२७
माघ	२३	२२।१६।२८	२१।६।१४,२२।२९	२२।९।१२।१९।२७
फाल्गुन	२३।४।३०	२४।६।१३।२०।२७	२५।६।१४।२१।३०	२६।६

सौम्यचक्रम्

	३७	३८	३९	४०
चैत्र	१	२६।१५	२५।१।८।१६।२४	२६।६।२३।३०
बैशाख	१।७।१५।२३।३०	१।१।८।१९।२२।३०	२।१।८।१९।२२।३०	४।८।१७।३०
ज्येष्ठ	५।६।१३।२१।२६	६।६।१४	७।६	७।९ व
आषाढ़	६।५।१३	६।२० व	७।१८	६।६।१६।२४।३१
श्रावण	१०।२७	८।३।११।२१।३०	६।८।१५।२२।३०	१०।८।१९।२३।३१
भाद्रपद	११।६।१४।२२।३०	१२।८।१४।२२।३०	१३।७।१५।२४	१४।१०
आश्विन	१५।७।१७।२६	१६।१०	१६।२४	१५।६ व
कार्तिक	१८	१७	१५।६।२२	१५।६।१९।२३
मार्गशीर्ष	१८।२२	१७।६।१६।२३	१७।१।६।२१	१८।१।८।१६।२९
पौष	१९।२।१०।१८।२६	२०।३।१०।१८।२७	२१।२।११।१६	२२।७
माघ	२३।४।१२।२०	२४।६	२४।२१ व	२३
फाल्गुन	२६।१२१ व	२५	२३।४।१२।२५	२३।२।१०।१८।२९

सौम्य चक्रम्

	४१	४२	४३	४४
चैत्र	२७।१।८।१६।२४	१।९।१०।२४।२८व	२।२७ व	१
वैशाख	४।३।२०व	४।२व	३।६।१४।२८	१।४।१२।२०।२७
ज्येष्ठ	४।१३।२५	३।१।११।१८।२६	४।३।१०।१८।२५	५।३।१०।१७।२५
आषाढ़	६।१।९।१६।२४।३१	७।२।८।१६।२४	८।१।८।१८	८।३।२६व६
श्रावण	११।८।१६।२७	११।३।१३।२९व१२	११	८।१६।२७
भाद्रपद	१४।१८व	१२।१०	११।१०।२०।२८	११।४।१२।२४।२७
आश्विन	१३।८।२०।२६	१३।९।१३।२१।२९	१४।५।२१।२६	१९।९।१३।२३
कार्तिक	१६।७।१४।२२	१७।६।१४।२व	१८।६	१८।२१
मार्गशीर्ष	१८।१।१०।२३	२०।१२।१४व	१६	१७।८।२०।२६
पौष	२२।१०व	२०।२१	१८।६।१५।२३	२०।८।१६।२४
माघ	२१।६।१६।२५	२१।२।१०।१७।२४	२२।८।१७।२४	२३।१।८।१८
फाल्गुन	२५।८।१७।२४	२५।२।८।२७	२६।३।१५	२६

सौम्य चक्रम्

	४५	४६		
चैत्र	२६।१२।२१।२६	२६।७।१४।२१।२८		
वैशाख	२।९।१२।१८।२६	३।४।१२।१८।२८		
ज्येष्ठ	६।३।११।२४	७।३२ व		
आषाढ़	८।७व	६।३।२०।२८		
श्रावण	८।२।१२।२०।२८	८।४।१२।१८।२४		
भाद्रपद	१२।९।१२।२०।२९	१३।४।१२व२२		
आश्विन	१६।८	१६।१२व		
कार्तिक	१७।३व१६।१६	१५।८।१८।२७		
मार्गशीर्ष	१७।९।१४।२२।२९	१८।८।२०।२८		
पौष	२१।७।१४।२२	२२।८।२४		
माघ	२४।४।३०व	२४।७व		
फाल्गुन	२४।१७।२४	२३।९।१४।२२।२९		

गुरु चक्रम्

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
चैत्र	६	८	११	१३	१४	१८	२१	२३	२५	२७
वैशाख	६	९	११	१३	१४	१८	२०	२३	२५	५
ज्येष्ठ	७	९	११	१३	१४	१८ व	२०	२३	२६	१
आषाढ़	७	१०	११	१३	१५	१७	२०	२३	२६	१
श्रावण	८	११	११	१४	१५	१७	२०	२३	२६	२
भाद्रपद	८	११	१२	१४	१५	१८	२०	२२	२५	२
आश्विन	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२५	१
कार्तिक	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२५	१
मार्गशीर्ष	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	१
पौष	९	११	१४	१५	१८	१९	२२	२३	२५	१
माघ	८	११	१४	१५	१८	२०	२२	२४	२५	१
फाल्गुन	८	११	१३	१५	१८	२०	२३	२५	२६	२

गुरु चक्रम्

	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
चैत्र	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३
वैशाख	३	५	७	९	११	१३	१६	१८	२१	२३
ज्येष्ठ	३	५	७	९	११	१३	१५	१८	२१	२४
आषाढ़	४	६	८	९	११	१३	१५	१८	२०	२४
श्रावण	४	६	८	१०	११।१४	१४	१६	१८	२०	२३
भाद्रपद	४	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२३
आश्विन	४	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२३
कार्तिक	४	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
मार्गशीर्ष	४	७	९	१२	१४	१५	१७	१९	२१	२३
पौष	४	६	९	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२३
माघ	४	६	९	११	१४	१६	१८	२०	२२	२४
फाल्गुन	४	६	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२४

स्यु चक्रम्

	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
चैत्र	२५	२७	२	४	७	९	११	१४	१६	१८
वैशाख	२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१८|११
ज्येष्ठ	२६	१	३	५	७	९	११	१३	१६	१७
आषाढ़	२६	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
श्रावण	२६	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
भाद्रपद	२६	२	५	७	९	११	१२	१४	१६	१८
आश्विन	२६	२	५	७	९	११	१३	१५	१६	१९
कार्तिक	२५	१	४	७	१०	१२	१३	१५	१७	१९
मार्गशीर्ष	२६	१	४	७	१०	१२	१४	१६	१७	१९|५
पौष	२६	१	४	७	१०	१२	१४	१६	१८	२०
माघ	२६	१	४	६	९	१२	१४	१६	१८	२०|२८
फाल्गुन	२७	२	४	६	९	१२	१४	१६	१८	२१

गुरु चक्रम्

	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
चैत्र	२१	२३|१०	२६	१	३	५	७	९	१२ व	१४
वैशाख	२१	२४	२६	१|१९	३|२०	५|१८	७|९	९|२८	११|१६	१४
ज्येष्ठ	२१	२४	२६|६	२	४	६	८	१०	१२	१४
आषाढ़	२१	२४	२७	२	४|१७	६	८|१०	१०|१८	१२	१४
श्रावण	२१	२४	२१|२०	२	५	७	९	११	१२|१५	१४|३०
भाद्रपद	२०	२३	२६	२	५	७|२८	९|२५	११|१७	१३	१५
आश्विन	२०|२	२३	२६	२	५	८	१०	१२	१३|१५	१५|१९
कार्तिक	२१	२३	२६	२	५	८|२७	१०	१२	१४	१६
मार्गशीर्ष	२१|९	२३	२६	२	५	७	१०	१२|१०	१४	१६
पौष	२२	२४	२६|२७	२	४	७	१०	१३|व	१४	१६|११
माघ	२२|१३	२४	२७	२	४	७	१०|व	१२	१४	१७
फाल्गुन	२३	२५	२७|२६	२|२१	४|१५	७	९	१२|१०	१४	१७

गुरु चक्रम्

	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
चैत्र	१७|व	१९	२२	२४	२६	१	३	५	७	९ २४
वैशाख	१६	१९	२२	२४	२६|१६	१|७	३|४	५|४	७	१०
ज्येष्ठ	१६	१९	२२ व	२४	२७	३	४|२९	६|३२	७	१०
आषाढ़	१६	१९|२व	२१	२४	२७	२|१२	५	७	८ ७	१०|१८
श्रावण	१६	१८	२१	२४	२७	३	५	७	९	११
भाद्रपद	१६|८	१८|५	२१	२३|व	२७ व	३	५	७	९|४	११|१६
आश्विन	१७	१९	२१	२३|२४	२६	३ ६ व	५	७	१०	१२
कार्तिक	१७|१२	१९|२४	२१|२२	२४	२६	३	५	७	१०	१२
मार्गशीर्ष	१८	२०	२२	२४	२६	२	५	७	१०	१२ १
पौष	१८|१५	२०|२०	२२|२२	२४|१९	२६|२	२	५	७	१०	१३ व
माघ	१९	२१	२३	२५	२७	२	५	७	१०	१२
फाल्गुन	१९	२१|२९	२३|१९	२५|१६	२७|१२	२|५	५	७	१०	१२

गुरु चक्रम्

	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
चैत्र	१२	१४	१७	२० व	२२	२४	२९|२६	१|१२	३|१९	५|१७	८
वैशाख	१२	१४	१७|३२	१९	२२	२४|१४	२७	२	४	६	८
ज्येष्ठ	१२	१४	१६	१९	२२	२५	२७	५|१७	४|१४	६ १६	८
आषाढ़	१२|३०	१४	१६	१९	२२	२५ व	२७	३	५	७	९
श्रावण	१३	१४	१६|१४	१९	२२ व	२४	२७	३	५|२०	७|१३	९
भाद्रपद	१३|३१	१५	१७	१९	२१	२४	२७	३	६	८	१०
आश्विन	१४	१५|१५	१७|२७	१९	२१	२४	२७	३	६	८	१०
कार्तिक	१४	१६	१८	१९	२१|९	२४	२७	३|१८व	६|८	८	११
मार्गशीर्ष	१४	१६	१८|२७	१९|२	२२	२४	२७	३	५	८	११
पौष	१५	१७	१९	२० ४	२२|७	२४	२७	२	५	८	११
माघ	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७|२५	२|१०	५	८	१०
फाल्गुन	१५	१७	१९|२०	२१|७	२३|३	२५|१	१	३|१	५	८	१०

गुरु चक्रम्

	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२
चैत्र	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२४	२६	१	४	६
वैशाख	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	२	४	६
ज्येष्ठ	१०	१२	१४	१७	२०	२२	२५	२७	३	४|६	७
आषाढ़	११	१३	१४	१७	१९	२२	२५	१	३	५	७
श्रावण	११	१३	१५	१७	१९	२२	२५	१	३	६	८
भाद्रपद	१२	१४	१५	१७	१९	२२	२५	१	४	६	८
आश्विन	१२	१४	१६	१७	१९	२२	२४	२७	३	६	८
कार्तिक	१२	१४|१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	३	६	९
मार्गशीर्ष	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२७	३	६	९
पौष	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३	६	८
माघ	१२	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३	६	८
फाल्गुन	१२	१५	१७|१	२०	२२	२४	२६	१	३	६	८

गुरु चक्रम्

	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३
चैत्र	८	१०	१३	१५	१८	२०	२२	२५	२७	२	४
वैशाख	८	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२५	२७	२	४
ज्येष्ठ	८	१०	१२	१५	१७	२०	२३	२५	१	३	५
आषाढ़	८|२३	११	१३	१५	१७	२०	२३	२५	१	३	५
श्रावण	९	११	१३	१५	१७	२०	२२	२५	१	४	६
भाद्रपद	१०	१२	१४	१५	१७	२०	२२	२५	१	४	६
आश्विन	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२५	१	४	६
कार्तिक	१०	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२५	१	४	६
मार्गशीर्ष	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३	६
पौष	१०	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२५	१	३	६
माघ	१०	१३	१६	१८	२०	२२	२४	२६	१	३	६
फाल्गुन	१०	१३	१५	१८	२०	२२	२४	२६	१	३	६

भृगु चक्रम्

	१	२	३	४
चैत्र	३।१६व२	२।१०।२१	२५।१२।२२	४।८।२२
वैशाख	२।२व१	४।५।१२।२३	२७।२।१४।२४	६।५।२७
ज्येष्ठ	१।२।१६।२९	७।३।१४।२६	३।४।१५।२६	८।१७ व।७
आषाढ़	४।८।२१	१०।५।१७।२८	६।९।१६।२७	७।६व६।३०
श्रावण	६।२।१३।२५	१३।६।२१	६।७।१८।२९	७।१८
भाद्रपद	६।९।१६।२७	१५।३।१८	१२।८।१६।३०	८।१।१५।२७
आश्विन	१२।८।१९।३०	१७।१२	१५।१०।२०	११।६।११
कार्तिक	१५।१०।२१	१८।२५व१७	१७।१।११।२२	१३।२।१३।२४
मार्गशीर्ष	१७।१।१२।२३	१७	२०।४।१४।२५	१६।५।१६।२७
पौष	२०।४।१५।२५	१७।५।१९	२३।६।१६।२८	१९।८।१९
माघ	२३।६।१९।२७	१९।२।२१।२९	२६।१०।२१	२१।१।११।२२
फाल्गुन	२६।९।२०	२२।७।१९।२९	१।२।१४।२५	२४।३।१३।२४

भृगु चक्रम्

	५	६	७	८
चैत्र	२७।५।१६।२६	२४।९।२२	३।७।१८।३०	२६।१०।१९।३०
वैशाख	३।६।१७।२८	२६।२।१५।२६	६।१०।२२	२।२।२१
ज्येष्ठ	६।७।१८।२९	२।७।१८।२९	८।३।१६	४।९।११।२२
आषाढ़	९।९।२०।३१	५।९।२०।३१	११।१२	७।१।१२।२३
श्रावण	१२।९।२१	८।११।२२	१२।१७।२९व१२	१०।२।१३।२४
भाद्रपद	१४।१।११।२३	१०।२।१३।१४	१२।१८व११	१३।४।१४।२५
आश्विन	१७।५।१६।१८	१३।३।१४।२५	११।७।२९	१६।६।१७।२९
कार्तिक	२०।१०।२२	१६।५।१६।२६	१३।९।२१	१९।८।१९।३०
मार्गशीर्ष	२२।६।२३	१९।८।१९।२९	१५।६।१८।२९	२२।८।१७
पौष	२४	२२।११।२१	१८।१०।२१	२४।५।१७
माघ	२४।४व२३	२४।२।१३।२३	२०।३।१४।२९	२६।१।१४।२९
फाल्गुन	२३।२१	२७।४।१४।२६	२३।६।१७	२

शनि चक्रम्

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
चैत्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
वैशाख	१ ६	२।११	३।१०	५	५	६	७	८	९	१०
ज्येष्ठ	२	३	४	५	५	७	८	८	९	१०
आषाढ़	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०
श्रावण	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
भाद्रपद	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
आश्विन	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
कार्तिक	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मार्गशीर्ष	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
पौष	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
माघ	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
फाल्गुन	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

शनि चक्रम्

	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
चैत्र	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
वैशाख	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१७	१८	१९
ज्येष्ठ	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१८	१९
आषाढ़	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१८	१९
श्रावण	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१८	१९
भाद्रपद	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१८	१९
आश्विन	१२	१२	१४	१४	१५	१६	१७	१७	१८	१९
कार्तिक	१२	१२	१४	१५	१५	१६	१७	१८	१८	१९
मार्गशीर्ष	१२	१२	१४	१५	१६	१६	१७	१८	१९	१९
पौष	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१७	१८	१९	२०
माघ	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०
फाल्गुन	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०

शनि चक्रम्

	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
चैत्र	२०	२१	२२	२३	२३	२४	२५	२६	२७	१
वैशाख	२०	२१	२२	२३	२३	२४	२५	२६	२७	१
ज्येष्ठ	२०	२१	२२	२३	२३	२५	२५	२६	२७	१
आषाढ़	२०	२१	२२	२७।१७	२३	२५	२५	२६	२७	१
श्रावण	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१
भाद्रपद	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१
आश्विन	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२'७	१
कार्तिक	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१
मार्गशीर्ष	२०	२१	२२	२२।१५	२३	२४	२५	२३	२७	१
पौष	२०	२१	२२	२३	२३।९	२४	२५	२६	२७	१
माघ	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२५	२६	२७	१
फाल्गुन	२१	२२	२२	२३	२४	२५	२६	२६	२७	१।२९

शनि चक्रम्

	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
चैत्र	२	२।१	३	४।१८	५।२२	६।२७	७।२१	९	९	१०व
वैशाख	२	३	४	५	६	७	८	९	९।१४	१०।२९
ज्येष्ठ	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
आषाढ़	२	३	४।२४	५	६।३१	७	८	९	१०	११
श्रावण	३	३।३१	५	६	७	७।६	८।७	९।२२	१०।७	११
भाद्रपद	२ व	४	५	६	७	८	९	१०	११	११।२२
आश्विन	२	४।४व३	५	६	७	८	९	१०	११	१२
कार्तिक	२	३	५।११ व	६	७	८	९	१०	११	१२
मार्गशीर्ष	२	३	४	६	७	८	९	१०	११	१२
पौष	२	३	४	५	१।२ व६	८।२७ व	९	१०	११	१२
माघ	२	३	४	५	६	७	९	१०	११	१२
फाल्गुन	२	३	४	५	६	७	९	१०	११	१२

शनि चक्रम्

	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
चैत्र	१२	१३	१४	१५	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वैशाख	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
ज्येष्ठ	११।४	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
आषाढ़	१२	१२।१	१३।३०	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
श्रावण	१२	१३	१४	१४।२३	१५	१६	१७	१८	१८	१९
भाद्रपद	१२	१३	१४	१५	१५।२४	१६	१७	१८	१८।२३	१९
आश्विन	१२।४	१३।२७	१४	१५	१६	१६।२३	१७	१८	१९	१९।३०
कार्तिक	१३	१४	१४।२३	१५	१६	१७	१७।२३	१८	१९	२०
मार्गशीर्ष	१३	१४	२५	१५।२७	१६	१७	१८	१८।२५	१९	२०
पौष	१३	१४	२५	१६	१६	१७	१८	१९	१९।२९	२०
माघ	१३	१४	२५	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२०
फाल्गुन	१३	१४	२५	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२०।१

शनि चक्रम्

	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
चैत्र	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२६।८	२७।२६	
वैशाख	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१	
ज्येष्ठ	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१	
आषाढ़	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१	
श्रावण	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	१	
भाद्रपद	२०	२१	२२	२३	२४	२५	३६	२७	१	
आश्विन	२०	२१	२२	२३	२४	२५।१८व	२६।१४व	२७	१	
कार्तिक	२०	२१	२२	२३	२४	२४।१७	२५	२६	१।१७व	
मार्गशीर्ष	२०।२	२१	२२	२३	२४	२५	२५।१३	२६।२७	२७	
पौष	२१	२१।६	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२७ ६	
माघ	२१	२२	२३	२३	२४	२५	२६	२७	१	
फाल्गुन	२१	२२	२३	२४	२४।११	२५।२९	२६	२७	१	

राहु चक्रम्

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
चैत्र	२	२७	२६	२४	२३	२१	२०	१९|१७	१७	१६
वैशाख	२|२७	२७	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१७	१६|१०
ज्येष्ठ	१	२७	२६|२०	२४	२३	२१	२०	१८	१७	१५
आषाढ़	१	२७	२५	२४	२३|२२	२१	२०	१८	१७	१५
श्रावण	१	२७	२५	२४	२२	२१	२०|५	१८	१७|३०	१५
भाद्रपद	१	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५
आश्विन	१	२७|९	२५	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५
कार्तिक	१	२६	२५	२३	२२	२१|२७	१९	१८	१६	१५
मार्गशीर्ष	१	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१८|२२	१६	१५
पौष	१	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१५|१७
माघ	१	२६	२५|२९	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४
फाल्गुन	१	२६	२४	२३	२२|२३	२०	१९	१७	१६	१४

राहु चक्रम्

	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
चैत्र	१४	१३	११	१०	८	७	५	४	३	१
वैशाख	१४	१३	११	१०	८	७	५	४	२	१
ज्येष्ठ	१४	१३	११	१०	८	७	५	४	२	१
आषाढ़	१४	१२	११	९	८	७|१९	५	४	२	१
श्रावण	१४	१२	११	९	८	६	५	४	२	१
भाद्रपद	१४	१२	११	९	८	६	५	३	२	१
आश्विन	१३	१२	११	९	८	६	५	३	२	२७
कार्तिक	१३	१२	१०	९	८	६	५	३	२	२७
मार्गशीर्ष	१३	१२	१०	९	७	६	५|५	३	२	२७
पौष	१३	१२	१०	९	७	६	४	३	१	२७
माघ	१३	१२	१०	९	७	६	४	३	१	२७
फाल्गुन	१३	११	१०	९|८	७	६|२१	४	३	१	२७

राहु चक्रम्

	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
चैत्र	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८	१७|१	१५	१४
वैशाख	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३
ज्येष्ठ	२६	२५	२३	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३
आषाढ	२६	२५	२३	२२	२१|२४	१९	१८	१६	१५	१३
श्रावण	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१५|२१	१३
भाद्रपद	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१३
आश्विन	२६	२४	२३	२२|२२	२०	१९	१७	१६	१४	१३
कार्तिक	२६	२४	२३	२१	२०	१९	१७	१६	१४	१३
मार्गशीर्ष	२६	२४	२३	२१	२०	१९|१२	१७	१४|१६	१४	१३
पौष	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२
माघ	२५	२४	२३|२०	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२
फाल्गुन	२५	२४	२२	२१	२०|१४	१८	१७	१५	१४	१२

राहु चक्रम्

	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
चैत्र	१२	११	९	८	६	५	३	२	१|७	२६
वैशाख	१२	११|२६	९	८	६	५	३	२	२७	२६
ज्येष्ठ	१२	१०	९	८|१९	६	५	३	२	२७	२६
आषाढ	१२	१०	९	७	६	५|१३	३	२	२७	२६
श्रावण	१२	१०	९	७	६	४	३	१	२७	२६
भाद्रपद	११	१०	९	७	६	४	३	१	२७	२५
आश्विन	११	१०	९	७	६	४	३|२	१	२७	२५
कार्तिक	११	१०	८	७	६	४	२	१	२७	२५
मार्गशीर्ष	११	१०	८	७	६	४	२	१	२७	२५
पौष	११	१०	८	७	६	४	२	१	२६	२५
माघ	११	१७|४	८	७|२८	६	४	२	१	२६	२५
फाल्गुन	११	९	८	६	६	४|२३	२	१	२६	२५

राहु चक्रम्

	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
चैत्र	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१३	१२|५
वैशाख	२५|१०	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१३	११
ज्येष्ठ	२४	२३	२२|३	२०	१९|२८	१७	१६	१४	१३	११
आषाढ़	२४	२३	२१	२०	१८	३७	१६|२९	१४	१३	११
श्रावण	२४	२३	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१३|१३	११
भाद्रपद	२४	२३|२१	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२	११
आश्विन	२४	२२	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२	११
कार्तिक	२४	२२	२१	१९	१८	१७|१३	१५	१४	१२	११
मार्गशीर्ष	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१४|८	१२	११
पौष	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०
माघ	२३	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०
फाल्गुन	२३	२२	२०	१९	१८|६	१६	१५	१३	१२	१०

राहु चक्रम्

	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
चैत्र	१०	९	७	६	४	३	१	२७	२६|८	२४
वैशाख	१०	९|१८	७	६	४	३	१	२७	२५	२४
ज्येष्ठ	१०	८	७	६|११	४	३	१	२७	२५	२४
आषाढ़	१०	८	७	५	४	३|४	१	२७	२५	२४
श्रावण	१०	८	७	५	४	२	१	२६	२५	२४|२
भाद्रपद	१०|७	८	७	५	४	२	१	२६	२५	२३
आश्विन	९	८	६	५	४|२५	२	१	२६	२५	२३
कार्तिक	९	८	६	५	३	२	१|१९	२६	२५	२३
मार्गशीर्ष	९	८	६	५	३	२	२७	२६	२५|१३	२३
पौष	९	८|२६	६	५	३	२	२७	२६	२४	२३
माघ	९	७	६	५|२१	३	२	२७	२६	२४	२३
फाल्गुन	९	७	६	४	३	२|१५	२७	२६	२४	२|३२

राहु चक्रम्

	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
चैत्र	२३	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०|१८	८
वैशाख	२३|३	२१	२०|२३	१८	१७	१५	१४	१२	११	९	८
ज्येष्ठ	२२	२१	१९	१८	१७,२०	१५	१४	१२	११	९	८
आषाढ़	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१४|१२	१२	११	९	८
श्रावण	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३	१२	११|५	९	८
भाद्रपद	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	९	८
आश्विन	२२	२१	१९	१८|९	१६	१५	१३	१२	१०	९	७
कार्तिक	२२	२१	१९	१७	१६	१५|१४	१३	१२	१०	९	७
मार्गशीर्ष	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१३	११	१०	९|२१	७
पौष	२२|९	२०	१९	१७	१६	१४	१३	११	१०	८	७
माघ	२१	२०	१९|४	१७	१६	१४	१३	११	१०	८	७
फाल्गुन	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१३|२३	११	१०	८	७

राहु चक्रम्

	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
चैत्र	७	५	४|३व	२	१	२६	२५	२४|६	२२	२१|२३	१९
वैशाख	७	५	३	२	१	२६	२५	२३	२२	२०	१९
ज्येष्ठ	६	५	३	२	१	२६	२५	२३	२२	२०	१९
आषाढ़	६	५	३	२	२७	२६	२५|२०	२३	२२	२०	१९
श्रावण	६	५	३	२	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९
भाद्रपद	६	५	३	२	२७	२६	२४	२३	२२|१०	२०	१९|७
आश्विन	६	४	३	१	२७	२६	२४	२३	२१	२०	१८
कार्तिक	६	४	३	१	२७	२६|६	२४	२३	२१	२०	१८
मार्गशीर्ष	६	४	३	१	२७	२५	२४	२३|४	२१	२०|२८	१८
पौष	६|१०	४	३|५	१	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८
माघ	५	४	२	१	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८
फाल्गुन	५	४	२	१	२७|२	२५	२४	२२	२१	१९	१८

राहु चक्रम्

	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
चैत्र	१८	१६	१५	१३	१२	१०	९	८|१०	६	५	३
बैशाख	१८|२०	१६	१५	१३	१२	१०	९	७	६	५|१३	३
ज्येष्ठ	१७	१५	१५|१२	१३	१२	१०	९	७	६	४	३
आषाढ़	१७	१६	१४	१३	१२|११	१०	९|३०	७	६	४	३
श्रावण	१७	१६	१४	१३	११	१०	८	७	६|२२	४	३
भाद्रपद	१७	१६	१४	१३	११	१०	८	७	६	४	३|१९
आश्विन	१७	१६|१९	१४	१३|२९	११	१०	८	७	५	४	२
कार्त्तिक	१७	१५	१४	१२	११	१०|२०	८	७	५	४	२
मार्गशीर्ष	१७	१५	१४	१२	११	९	८	७|१९	६	४	२
पौष	१७|२७	१५	१४	१२	११	९	८	६	५	४|९	२
माघ	१६	१५	१४|२१	१२	११	९	८	६	५	३	२
फाल्गुन	१६	१५	१३	१२	११|१३	९	८	६	५	३	२
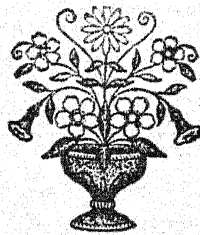
स्त्री-पुरुषों के भेद का ज्ञान।

संसारमें प्रायः तीन प्रकार के पुरुष होते हैं उत्तम मध्यम और निकृष्ट। उत्तम पुरुषों के हाथ का मध्य भाग ऊँचा कोमल कान्तियुक्त मनोहर रक्त-मांस से परिपूर्ण और पुष्ट होते हैं। अङ्गुलियां लम्बी सीधी नीचे का भाग उठा हुआ मिलाने से छिद्र रहित, स्पष्ट-जाल-रेखाओं से युक्त। नख ताम्र वर्ण के। रेखायें थोड़ी उत्तमोत्तम स्पष्ट मनोहर गम्भीर स्निग्ध पूर्ण वर्तुल और शुद्ध होती हैं।

मध्यम पुरुषों के हाथ तथा अङ्गुलियाँ साधारण, रेखायें चौड़ी पीली अनेक स्थान से कुछ छिन्न भिन्न। अङ्गुलियोंके ऊपर का भाग चौड़ा मिलाने पर नीचे का भाग अनेक स्थानो से छिद्र युक्त होता है।

तृतीय श्रेणी के मनुष्यों के हाथ का मध्य भाग गहिरा ऊंचा नीचा, रेखायें सब छिन्न भिन्न, बहु रेखा या तीन रेखा युक्त अथवा भाग्य रेखा रहित होते हैं अङ्गुलियाँ सब टेढ़ी हाथ का रंग सफेद या काला हाथ तथा रेखायें देखने में भद्दी होती हैं।

उत्तम प्रकार का मनुष्य बुद्धिमान, उदारचित्त, शान्तप्रकृति, सुन्दर, भाग्यवान, मानसिक-बलयुक्त, मधुरवाणी-बोलने-वाला, गुरु-साधुभक्त, धन-पुत्र और स्त्री से युक्त होता है यदि आयु रेखा में शुद्ध त्रिकोण हो तो अपने पुरुषार्थ से मान प्रतिष्ठा गृह भूमि वाटिका वाहन इत्यादि प्राप्त कर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है। प्रायः ऐसे पुरुष मृग जाति के होते हैं। इनका विशेष वर्णन मृगपुरुषों के चारों भेदों में देखना चाहिये।

द्वितीय श्रेणी का मनुष्य परिश्रम से कार्य करने वाले विश्वास रहित होते हैं। इनका जीवन दुःख सुख मिला हुआ होता है। ऐसे मनुष्य वृषभ या तुरग जाति के होते हैं।

तीसरी श्रेणी के मनुष्य दुःखी निर्धन दरिद्र भाग्यहीन क्रूर-स्वभाव पाखण्डी तथा दुष्टहृदय के होते हैं। ये प्रायः तुरग जाति के होते हैं। इनका फल तुरग पुरुषों के ऐसा कहना चाहिये। इसी प्रकार स्त्रियों के करतल का निर्णय कर फल कहना उचित होगा।

सामुद्रिक रहस्य के पूर्वार्द्ध नख शिख वर्णन में हस्ताकुला लक्षण से प्रमदा लक्षण विशेष तक। तथा शशक मृगादि ४ प्रकार

के पुरुष पद्मिनी चित्रिणी इत्यादि ४ प्रकार की स्त्रियों के लक्षण तथा उत्तराद्र्ध में विशेष रूपसे कही हुई रेखाओं का विचार कर फल कहना चाहिये।

फल-कथन-प्रकार।

बालक युवा वृद्ध वर्ण संकर सधवा विधवा पैशाचिकचिह्न देवी-देवादि लक्षण तथा फल को उक्त ग्रन्थ में देखिये। विशेष फल नीचे दर्शाया जाता है।

राजयोगादि विचार।

प्राणियों के कर कमल में पुण्य ऊर्ध्व छत्र कमल धनुष रथ अङ्कुश पुष्करिणी स्वस्तिक तोरण चामर गज कलश मीन ध्वजा षट्कोण त्रिकोण मन्दिर यव वीणा शैल हल माला शंख चक्र मकर इत्यादि राजयोग कारक रेखायें स्पष्ट सुन्दर स्निग्ध पूर्ण-गुणयुक्त अनेक हों तो मनुष्य अत्यन्त प्रतापशाली होता है। ये रेखायें जैसे २ न्यून वा अधिक हों वैसे ही वैसे न्यून वा अधिक प्रताप का वर्णन करना ये राजयोगकारक रेखायें हैं। इन रेखाओं से राज्य सुख वा राज-सम्बन्ध-जन्य यथायोग्य सुख प्राप्त होता है।

साधारण राजयोग की रेखा होने पर ब्राह्मण विद्वान्, वैश्य धनी, क्षत्रिय शूर, और शूद्र राज सेवक होकर राज सुख भोगता है।

जो राजकुल में उत्पन्न होते हैं वे साधारण राजयोग से भी राजा होते हैं परन्तु विशेष उन्नति नहीं कर सकते।

प्रबल राजयोग में नवविधि का वर्णन अनन्त गुण, सर्व विद्यारत, रसिक, चतुर, वीर, सुन्दर, वाणीविचक्षण, मोहक श्रृङ्गार (सजावट के कार्य में निपुण) रत, दया दान पुरुषार्थ युक्त सयनानुकूलवार्ता कारक वंशाभिमानी धीर महान् सर्वैक्य-कारक बाल्य-भाषण देशान्तर-विचरणशील मृगयासक्त कलाशक्तिधर शत्रुनाश साम दान दण्ड भेद षाड्गुण्य (सन्धि विग्रह यान आसनद्वैधी भाव समाश्रय) नीति गुप्त भेद ज्ञान स्वजनसम्बन्धीसंरक्षण गुप्तधनसंचय परमर्म-ज्ञान स्वमर्म गोपन शौर्य प्रसाद गृह रथ गजभूमि वाटिका वाहन जलाशय देश ग्राम वन पर्वत नदी नद सिन्धु विहार प्रजाधन पालनादि

का शुभ और प्रशस्त वर्णन राज रेखाओं के द्वारा यथावकाश करना चाहिये ये प्रायः मृग पुरुष होते हैं अतएव मृग पुरुष के समान वर्णन करना उचित होगा।

फल श्लोकाः।

नृपे विद्यानयःशक्तिर्बलं तस्करताक्षयः ॥
प्रजाशास्तिः प्रजारागो धर्मकामार्थतुल्यता ॥ १ ॥
प्रयाणरण खड्गादि शस्त्राण्यरिपराजयः ॥
अरिनाशोऽद्रिशैलादि वासोऽरिपुरशून्यता ॥ २ ॥
महः श्रीदानकीर्त्याद्या गुणौघारूपवर्णनम् ॥ ३ ॥

महिषी।

रानियों के करतल कोमल रक्तवर्ण, छिद्ररहित, मध्यभाग उन्नत, राजरेखाओं से युक्त, अल्परेखा, अङ्गुष्ठ और अङ्गुलियां सीधी कमल के कली के समान, शंखचक्रादि दक्षिणावर्त, इत्यादि शुभ रेखाओं के होने से राजपत्नी वा राजमाता होती हैं। प्रायः इनका वर्णन चित्रिणी में किया जाता है।

फल वर्णन रीतिः।

देव्यां विज्ञानचातुर्यं त्रपाशीलव्रतादयः।
रूपलावण्यसौभाग्यप्रेमश्टङ्गारमन्मथाः ॥ १ ॥
वेणी-धम्मिल्ल-सीमन्त-भाल-श्रवण-नासिकाः।
कपोलाधर-नेत्र-भ्रू-कटाक्ष-दशनोक्तयः ॥ २ ॥
कण्ठ-बाहुकरोरोज-नाभ्यो मध्यं वलित्रयम् ॥
रोमालिश्रोणिजंघोरुगतिक्रमनखाः क्रमात् ॥ ३ ॥

रानियों में विज्ञान विषयक चतुरता लज्जा शीलता व्रतादि रूप-सौन्दर्य सौभाग्य श्टङ्गार मधुर भाषण इत्यादि।

राजकुमार।

राजरेखाओं के द्वारा राजकुमार का भी वर्णन करना चाहिये।

फल वर्णन प्र० ।

कुमारे शस्त्र-शास्त्र-श्री-कलाबल-गुणोच्छ्रयाः ॥
वाह्याली खुरली राजभक्तिः शुभगतादयः ॥ १ ॥

कुमार को शस्त्र और शास्त्र विद्या सम्पति वा शोभा कला ६४ बल गुणाधिक्य खुरली (सौनिकशिक्षण) राजभक्ति सौन्दर्य इत्यादि, का वर्णन करना चाहिये ।

मृगया ।

मृगयायां श्वसञ्चारो वागुरा नीलवेषता ।
भढढकामृगत्रासः सिंहयुद्धं त्वरागतिः ॥ २ ॥

और मृगयाशील पुरुषों के मृगया विषयक प्रश्न करने पर मृगया में कुत्तों का चालन फन्दा नीलपोशाक सिंह के साथ युद्ध, शीघ्र गमन इत्यादि का वर्णन करना चाहिये ।

मन्त्रिः ।

जिसकी तर्जनी कुशाग्र के समान पतली, कनिष्ठा दीर्घ, नख ताम्र वर्ण ह्रस्व, शुक्र तथा चन्द्र स्थान मनोहर आयु रेखा मातृ पितृ रेखा युक्त राजयोगकारक रेखाओं से सम्पन्न कर वाले पुरुष राज मन्त्री होते हैं । और भी—

गिरि-कङ्कण-योनीनां नर-मुण्डघटादिकम् ।
करेवै यस्य चिन्हानि राजमन्त्री भवेन्नरः ॥ १ ॥

गिरि (शैल) कङ्कण योनि, नरकपाल, घटादि रेखायें जिसके हाथ में हों वह पुरुष राजमन्त्री होता है ।

फल वर्णन प्र० ।

महामात्ये नयः शास्त्रं स्थैर्यं बुद्धिर्गंभीरता ।
शक्तिः शस्त्रमलोभत्वं जनरागो विवेकता ॥ १ ॥

मन्त्री भक्तो महोत्साहः कृतज्ञो धार्मिकः शुचिः ॥
अकर्कशः कुलीनश्च [1]स्मृतिज्ञः सत्य भाषकः ॥ २ ॥

१—स्मृतिज्ञ=धर्मशास्त्रज्ञः ।

विनीतः स्थूल[२]लक्षश्चाव्यसनो वृद्धसेवकः ॥
अक्षुद्रः सत्व-सम्पन्नः प्राज्ञः शूरोऽचिरक्रियः ॥ ३ ॥

राज्ञा परीक्षितः सर्वोपधासु[३] निजदेशजः ॥
राजार्थ-स्वार्थ-लोकार्थ-कारको निस्पृहः शमी ॥ ४ ॥

अमोघ[४]वचनः कल्पपालिताशेषदर्शनः ॥
पात्रौचित्येन सर्वत्र नियोजितपदक्रमः ॥ ५ ॥

आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तादण्डनीतिकृतश्रमः ॥
क्रमागतो वणिक्पुत्रो भवेद्राज्यविवृद्धये ॥ ६ ॥

मन्त्र वर्णन प्र० ।

मन्त्रे पञ्चाङ्गता शक्तिः षाड्गुण्योपायसिद्धयः ॥
उदयाश्चिन्तनीयाश्च स्थैर्यौन्नत्यादि सूक्तयः ॥ १ ॥

मन्त्र=सलाह में पञ्चाङ्गता अर्थात् सहाय साधन उपाय देश-काल का विभाग और विपत्ति से प्रतीकार (बचाव) का वर्णन करना षाड्गुण्य सन्धि आदि प्रबल राजयोग में कहा है। उपाय की सिद्धि उदय उन्नति। सूक्ति=अच्छी उक्तियाँ। इनका वर्णन करना चाहिये (शक्ति=प्रभाव उत्साह मन्त्र)।

सेनापतिः ।

जिसके हाथ की अंगुलियाँ साधारण चतुष्कोण उतार चढ़ाव की (सूँड के तुल्य) गुरु भृगु मंगल का स्थान पुष्ट तथा मनोहर या त्रिकोण रेखाओं से युक्त पुण्य आयु मातृ पितृ ऊर्ध्व आदि शुभ रेखाओं से युक्त हो तो वह पुरुष सेनापति होता है।

फलव० ।

सेनापतौ महोत्साहः स्वामिभक्तिः †सुधीरभीः ॥
अभ्यासो वाहने शास्त्रे शस्त्रे च विजयो रणे ॥ १ ॥

---

२ स्थूललक्ष=बहुप्रदः । ३ धर्मादि परीक्षा से परीक्षित ॥ ४ अव्यर्थ वचनः ॥

† सुधी=विद्वान् । अभी=निर्भयः ॥

अतुल सम्पत्तिशाली।

ऊर्ध्वादि शुभरेखा, पुण्यरेखा, अंगुष्ठोदर में यव, मकर, हाथ की अङ्गुलियां छिद्ररहित तथा प्रशस्तरेखाओं के द्वारा सम्पत्ति का वर्णन यथावकाश करना चाहिये।

वैद्य।

अङ्गुलियों की पोर पुष्ट, अङ्गुलियां लम्बी और सीधी, ऊपर का भाग चतुष्कोण, बुध रवि और गुरु का स्थान उच्च तथा मनोहर पुण्य, ऊर्ध्व और मातृरेखा उत्तम, बुधस्थान में छोटी-छोटी कई रेखा तथा अंगुष्ठ मूल में यव इत्यादि हो तो मनुष्य चिकित्सा करने वाला होता है। यदि उक्त रेखाओं के साथ कनिष्ठा अंगुली गज सुण्ड के समान उतार चढ़ाव युक्त और नोकीली हो चन्द्र स्थान उच्च तथा मनोहर हो तो मनुष्य विशेषतः कठिन-कठिन रोगों का चिकित्सक होता है।

वैद्य लक्षणम्।

चिकित्सां कुरुते यस्तु स चिकित्सक उच्यते ॥
सच यादृक्समीचीनस्तादृशोऽपि निगद्यते ॥ १ ॥
तत्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मा स्वयं कृती।
लघुहस्तः शुचिः शूरः सज्जोपस्करभेषजः ॥ २ ॥
प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान् व्यवसायी प्रियंवदः।
सत्य-धर्म-परोयश्च वैद्य ईदृक् प्रशस्यते ॥ ३ ॥

शास्त्रार्थ तथा उसके तत्व को जानने वाला तथा सद्वैद्य के साथ कार्य देखने वाला और स्वयं कुशल, सिद्ध-हस्त, पवित्र, शूर, औषधादि सामान से युक्त, आवश्यकता के अनुकूल चट् उपाय सूझने वाली बुद्धि वाला, व्यवसाय करने और प्रिय बोलने वाला, सत्य तथा धर्म में तत्पर वैद्य प्रशंसा योग्य होता है।

ज्योतिषी।

जिसके हाथ की अङ्गुलियां चौकोर तथा लम्बीपोर की, पुष्ट, बुध और शनि स्थान उच्च तथा मनोहर, चन्द्र तथा रवि स्थान दोष रहित

पुण्य मातृ और ऊर्ध्व रेखा सवल हो, तथा त्रिकोण इत्यादि शुभ रेखाओं से युक्त कर वाला मनुष्य ज्योतिषी होता है।

श्रेष्ठ ज्यो० ल०।

शान्तो विनीतः शुद्ध्यात्मा देव-ब्राह्मण-पूजकः।
विमुखः परनिन्दासु वेदपाठी जितेन्द्रियः ॥ १ ॥
देवताराधनासक्तः स्वरशास्त्रविशारदः।
सिद्धान्तसंहितावेत्ता जातके च कृतश्रमः ॥ २ ॥
प्रश्नज्ञः शकुनज्ञश्च प्रशस्तो गणकः स्मृतः।
प्रमाणं वचनं तस्य भवत्येव न संशयः ॥ ३ ॥

न्यायाधीशः।

अङ्गुलियाँ जिसकी लम्बी चतुष्कोण अङ्गुष्ठ का दूसरा पोर मोटा, बुध, रवि, गुरु, शनि, चन्द्र का स्थान ऊँचा तथा मनोहर पुण्य रेखा मातृरेखायुक्त और भी यथा साध्य शुभ रेखायें हो तो विशेष तथा साधारण रेखा के अनुसार यथा योग्य न्यायाधीश, वालेष्टर, वकील, मुख्तार तथा सोख्तार इत्यादि होते हैं। विशेष कानून में उन्नति करने वालों के हाथमें ऊर्ध्व रेखा गुरु स्थान तक शुद्ध रूपसे चली जाती है। इनका फल चार प्रकार के पुरुषों में से लक्षणादि विचार कर कहना चाहिये।

शिल्पी।

हाथ की सभी अङ्गुलियाँ उतार चढ़ाव युक्त अनामिका तथा मध्यमा की पोर लम्बी रवि शनि चन्द्र, बुध, शुक्र मङ्गल का स्थान उच्च तथा मनोहर मातृ रेखा कृपाण के समान टेढ़ी उर्ध्वादि शुभ—रेखाओं से युक्त होने से मनुष्य को यथायोग्य कारीगर कहना चाहिये। इसी प्रकार अनेक व्यवसाय करने वालों के हाथ में रेखायें होती हैं। इनका अभ्यास करने से सभी बातें अनायास ही मालूम हो जाती हैं। उपरोक्त समस्त रेखायें पूर्ण हों तो फलपूर्ण, न्यून से न्यून फल-तारतम्य से कहना चाहिये।

अथ अर्णवीय-भेद (यूरोपियन)

रक्त वर्ण की शरीर में सफेद चिह्न होनेसे अर्णवीय पुरुष दुःखी और निर्धन, सफेद में लाल होने से धनवान तथा सुखी होते हैं। लाल से सफेद का वृषभ या तुरग और स्वेत में लाल से मृग-भेद, एवं स्त्रियों में, हस्तिनी शंखिनी तथा चित्रिणी भेद को रंग तथा रेखा के द्वारा निर्णय करना चाहिये।

उनकी पितृरेखा से आयु और पुण्य रेखा से धन आदि ऊर्ध्व रेखा से धर्म-कीर्ति तीर्थ इत्यादि दार रेखा तथा निम्नलिखित अपर रेखाओं के द्वारा बिवाह का भलीभांत वर्णन करना चाहिये। और सब रेखाओं का फल पूर्ववत् समझना। अङ्गूठे के द्वितीय पर्व में नक्षत्र चिह्न वा छोटी २ छिन्न-भिन्न रेखायें हों तो थोड़ी अवस्था में विवाह होता है। शुक्र स्थान से कोई रेखा निकल कर पितृ मातृ और आयु रेखा का भेद न कर बुध स्थान में प्राप्त होतो व्यापारी के, साथ, विवाह-रेखासे दो शाखा होकर एक बुध स्थान दूसरी रवि स्थान में पहुँचे तो उत्तम कारीगर के साथ बिवाह होता है। बुध स्थान उच्च तथा मनोहर हो वहाँ पर कई एक छोटी और सीधी रेखायें हो तो चिकित्सा करने वाले प्राणी के साथ में विवाह हो। बुध स्थानमें यव का चिह्न हो तो परिचित के साथ विवाह हो। आयु रेखा के सन्निकट परिणय रेखा होने से शीघ्र और दूर हो तो बिलम्ब से विवाह होता है।

देशान्तर यात्रा।

पितृ रेखा से निकल कर कोई एक रेखा चन्द्र स्थान तक जाय तो यात्रा में हानि होती है। वही रेखा चन्द्रस्थान को अतिक्रमण करके शाखायुक्त हो जाय तो यात्रा में कष्ट या मृत्यु होती है। मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर चन्द्र स्थान तक जाय तो जलयात्रा का योग होता है।

और यदि वहीं से रेखा उठ कर गुरु स्थानमें पहुंचे तो दीर्घ काल तक जलयात्रा होती है। इसी की एक शाखा यदि शनि स्थान में चली जाय तो विघ्न उपस्थित होकर जलयात्रा में रुकावट हो—

आती है । मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर आयुरेखा का स्पर्श करे तो जलयात्रा में मृत्यु हो। यदि मातृ रेखा तक रह जाय तो जलयात्रा के द्वारा बहुतसा धन प्राप्त होता है। इत्यादि ।—

व्यापार से अर्थ लाभ ।

१ बुध स्थान उच्च तथा मनोहर, छोटी २ सीधी रेखाओं से युक्त। २ मातृरेखा से एक शाखा बुध स्थान तक जाय। ३ कनिष्ठा अङ्गुली छोटी तथा गठीली हो। ४ मणिबन्ध से कोई एक रेखा उठ कर बुध स्थान तक जाय तो वह पुरुष वाणिज्य के द्वारा बहुत धन प्राप्त करता है ।

अनायास धन प्राप्तिः ।

चन्द्र स्थान से कोई एक टेढ़ी रेखा रक्तवर्ण की होकर बुध स्थान में जाय तो गाड़ा हुआ अथवा किसी खानि इत्यादि से विशेष धन प्राप्त होता है ।

जालिम (अरबी) मनुष्यों के भेद ।

काले हाथ में लाल रेखा होने से उक्त मनुष्य पापी और दरिद्र नहीं होते। इनके भाई बहिन का विचार विशेष नहीं करना। ये बहुत रूप धारण करने वाले और परिश्रम से द्रव्य पैदा करने वाले होते हैं। इन में एकता बहुत होतो है। ये आमदनी से खर्च अधिक नहीं करते। इनका फल प्रायः तुरग से अधिक मिलता है ।

ग्रहों से फल

हाथ में जो ग्रहों के स्थान हैं वे उन ग्रहों के क्षेत्र कहे जाते हैं। जो ग्रह जिस प्रकार बलवान होते हैं। उन्ही के अनुकूल वे स्थान भी मनोहर उच्च कान्तिमान तथा शुभ रेखाओं से युक्त होते हैं। जो ग्रह निर्बल होते हैं उनके स्थान भी उसी प्रकार उक्त गुण रहित होते हैं। ग्रह स्थान तीन प्रकार के होते हैं। १ उच्च २ निम्न ३ अत्युच्च इत्यादि।

रविः ।

रवि का स्थान ऊँचा मनोहरता आदि गुणों से युक्त हो तो मनुष्य कारीगर साहित्यवेत्ता विद्वान लेखक प्रेमी देशभक्त पराक्रमी चतुर उच्चाभिलाषी उदार राजतुल्य पराक्रम वाला धनवान तथा राज्य-मान प्रतिष्ठा आदि गुणों से युक्त होता है। निम्न होने पर आलसी दुश्चरित्र विलासी और पूर्वोक्त शुभफलों से रहित होता है अत्य-धिक ऊँचा होने पर बकवादी विचार रहित उदर तथा अनेक रोग से युक्त चापलूस अभिमानी ऊपरी आडम्बर वाला और अपने पूर्वजों के धनादि का नाशक होता है।

चन्द्रः ।

चन्द्र स्थान उच्च हो तो कल्पना करने वाला स्नेही, रसिक, मधु-रभाषी, सौम्य-प्रकृति, लेखक, दयावान, भ्रमण-शील, थोड़े उमर में बिवाह कारक, मातृ-सुख, कृषि स्त्री तथा धन धान्यादि युक्त होता है। निम्न होने से उक्त फलों के प्रतिकूल फल कहना चाहिये अत्यधिक ऊँचा होने से मनुष्य आत्महत्या का अभिलाषी उदासीन शुक्र-सम्बन्धी तथा उदर-सम्बन्धी रोगयुक्त होता है।

मङ्गलः ।

मङ्गल का स्थान उच्च हो तो उदार प्रतापी पराक्रमी मेधावी हठी युद्धप्रिय व्यवसायी बली क्रोधी विचाररहित गृहकलह के कारण दुःखी, निम्न हो तो उक्त फल के प्रतिकूल रुधिरविकार तथा अग्नि-मान्द्ययुक्त होता है।

अत्युच्च हो तो पिता की सम्पति बढ़ाने वाला सिपाही पुरुषार्थी बहुबिवाह वाला निर्दयी दुराचारी इत्यादि होता है।

बुधः ।

बुध उच्च बुद्धिमान वैद्य वा ज्योतिषी वाचाल कारीगर कौतुकी धनी अल्पावस्था में बिवाह सुन्दर स्त्रीयुक्त वाणिज्य कर्मकारक तथा कवि हाता है। निम्न से विपरीत फल अत्युच्च हो तो झूठा वाचाल मूर्ख ठग झगड़ा लगाने वाला होता है।

गुरुः ।

उच्च हो तो ऊँची अभिलाषा वाला माननीय सत्यवक्ता चतुर पण्डित सदाचारी विदेश-भ्रमण-करने वाला स्वतन्त्रताप्रिय विवाह से अधिक धन प्राप्ति पुत्र पौत्र धन धान्यादि युक्त होता है। अत्युच्च से स्वार्थी ठग धूर्त अपव्ययी निर्दयी अभिमानी इत्यादि होता है। निम्न हो तो चर्म क्षय वायु कफ रोग से युक्त तथा शुभ गुण रहित होता है।

शुक्रः ।

उच्च हो तो कारीगर रसिक स्नेही स्त्रीप्रिय विलासी उदार प्रभावशाली स्पष्टवक्ता आत्माभिमानी चिकित्सक बुद्धिमान सौन्दर्यप्रिय इत्यादि होता है। निम्न से विपरीत फल और शुक्र रोग युक्त होता है। अत्युच्च हो तो व्यभिचारी निर्लज्ज अहंकारी अनेक दुर्गुण तथा रोगों से युक्त होता है।

शनिः ।

उच्च हो स्वेच्छा चारी अल्पभाषी स्वाधीन ज्यौतिषी कार्यकुशल गुप्तविद्याओं का ज्ञाता सदाचारी स्नेही इत्यादि। निम्न होने से दुःखी अनेक पीड़ायुक्त, जुआड़ी व्यसनी मूर्ख और अल्पायु होता है। अत्युच्च से निष्ठुर नीच अपवित्र आत्महत्या चाहने वाला उदर वायु तथा मूत्राशय रोग युक्त होता है।

राहुः ।

किसी के मत से गुरु और शुक्र स्थान के बीच में राहु का स्थान माना गया है। इनका स्थान उच्च होने पर चिन्ताशील तार्किक गुप्त भेदों को छिपाने वाला उपदेशक विश्वासघाती धोखेबाज नीच संगत या नीच कर्म से धन प्राप्त करने वाला धनी अव्यवस्थित-चित्त इत्यादि का वर्णन करना चाहिये।

निम्न हो तो बड़ों की सम्पत्ति नाश करने वाला झगड़ालू अपव्ययी उदर इन्द्रिय तथा शिरोरोग युक्त होता है। और अत्युच्च

का फल भी प्रायः नेष्ट ही है। ग्रहों के स्थान द्वारा जन्ममास का ज्ञान होता है। जो नष्ट जन्म पत्र प्रकरण में दिया जायगा।

अथ सन्तान-विचार।

बुध के स्थान में सरल और शुद्ध रेखा हो तो मनुष्य सन्तान युक्त होता है। किसी किसी के मत से करभ स्थान में भ्रातृ भगिनी सूचक रेखाओं को भी सन्तान रेखा कहते हैं। अंगुष्ठ के उच्च स्थान में रहने वाली रेखाओं को भी सन्तान रेखा कहते हैं ये रेखायें सीधी सरल स्पष्ट गम्भीर लम्बी तथा एक मुखवाली पुत्र की और दो मुख-वाली पतली तथा टेढ़ी कन्या की सूचना देती है। जितनी रेखायें शुद्ध हों उतनी ही औरस सन्तान कहना और यदि वे छिन्नभिन्न तथा अति सूक्ष्म हों तो गर्भपात वा अल्पायु सन्तान कहना। इन रेखाओं में से कुछ छिन्नभिन्न कुछ स्पष्ट दिखलाई पड़ने वाली तथा कुछ शुद्ध रेखायें हों तो शान्त्यादि उपाय करने से गर्भोत्पन्न पोष्य-दत्तक भातृपुत्र इत्यादि का सुख होता है।

उक्त रेखायें यदि दोषयुक्त हों और बुध वा गुरु स्थान उच्च तथा मनोहर हो तो दत्तक सन्तान का सुख कहना। इन ग्रहों का स्थान निम्न हो तो दत्तक सन्तान लेने में भेद बुद्धि उत्पन्न होती है। शान्ति करने से इसकी निवृति होती है।

स्त्रियों के हाथ में तर्जनी तथा अनामिका के तृतीय पर्व में सीधी और स्पष्ट रेखा हो तो पुत्र और सूक्ष्म तथा टेढ़ी होने से कन्या की उत्पति कहना। करतल में रक्त रेखाओं के होने पर भी स्त्रियों को सन्तान युक्त कहना चाहिये।

हाथ में कुण्डल अंकुश कमल घट शकट मत्स्य हल ऊर्ध्वादि प्रशस्त रेखा होने से भी सन्तान का योग जानना।

चन्द्रमा का क्षेत्र मनोहर और शुभ रेखायुक्त तथा नख रक्तवर्ण हो तो भी सन्तान योग कहना चाहिये शुक्र का स्थान तथा ऊपर की उक्त रेखायें यदि दोषयुक्त हों तो प्रसवकाल में विशेष कष्ट होता है।

भाग्यरेखा दोष युक्त हो तो सन्तान द्वारा अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं और भाग्य रेखा शुद्ध हो तो मनुष्य पुत्र पौत्रादि से युक्त और सुखी रहता है।

माप–विधान।

१ यव के मान को १० वर्ष किसी किसी के मन से ७ वर्ष भी होता है। लम्बी रेखा को लम्बे और छोटी रेखा को बेड़े यवसे नापना चाहिये ३ यव नोक से नोक मिलाकर १ इञ्च ६ इञ्च का १ वित्ता ८ यव पेट से पेट मिलाकर १ अङ्गुल ३ अंगुल वा २ । इञ्च अथवा २४ यव पेट से पेट मिलाकर १ गिरह होता है। १ इञ्च का मान २० वर्ष होता है इसी अनुपातसे रेखाओं के द्वारा सुख दुःख के वर्षकी अवधि जानकर फल कहना चाहिये।

दो अंगुलियों के मध्य से जो वर्ष-संख्या कही है उसका आयु तथा पितृ रेखा में ३० या २५ वर्ष का मान लिखा है मातृ रेखा में उसी के सामने २१ वर्ष समझना चाहिये।

आयु के समय का ज्ञान।

१ आयु का ज्ञान दोनों हाथों के आयु तथा पितृ रेखासे किया जाता है।

२--दोनों हाथों में भिन्न २ स्थानों पर छिन्न भिन्न तथा रेखा की समाप्ति हो वा अरिष्ट सूचक चिन्ह पाये जाँय तो केवल भय वा कष्ट प्राप्त होकर निकल जाता है। ३—एक ही स्थान पर दोनों हाथों की दोनों रेखायें उक्त दोष से युक्त हों तो अवश्य मृत्यु होती है। ४—पहिले आयु का निर्णय करना अनन्तर उसी हिसाब से अरिष्ट का मान निकालना चाहिये यथा किसी के हाथ में ६० वर्ष की आयु ३ इंच के नाप पर मिला और एक हाथ में १ इञ्चपर पूर्वोक्त दोष प्राप्त हुआ तो अनुपात से २० वर्ष में अरिष्ट प्राप्त होता है।

आयु रेखा से वर्ष निर्णय।

(क) यदि बुध स्थान से प्रारम्भ कर गुरु स्थान तक आयु रेखा निर्विघ्न हो तो १०० वर्ष की आयु होती है। (ख) यदि कनिष्ठा मूल से मध्यमा मूल तक हो तो ८० वर्ष। (ग) अनामिका के मूल तक ६० तथा अनामिका के प्रारम्भ तक आयु रेखा हो तो ३० वर्ष की आयु होती है। (घ) इन स्थानों में न्यूनाधिक हो तो इसी अनुपात से न्यूनाधिक की कल्पना करनी चाहिये।

प्रकारान्तरः ।

(अ) यदि आयु रेखा मनोहर अविछिन्न तथा गुरु और शनि स्थान के मध्य तक हो तो उत्तम फल देनेवाली ९० वर्ष की आयु सूचित करती है। (क) सरला मनोहर पूर्ण तथा अखण्ड हो तो पुरुष सुन्दर तथा भाग्यशाली होता है और अंगुलियों की जड़तक पहुँचती हो तो धीर प्रकृति का होता है और यदि मातृ रेखा की ओर लटकती हो तो उत्तम फल देने वाली होती है। इनसे ८५ वर्ष की आयु समझनी चाहिये। (च) यह तर्जनी के पास किसी अपर रेखा से मिलती हो तो मध्यम फल देने वाली ६० वर्ष की आयु देती है। (ट) यह बुध स्थान पर किसी रेखा से कटी होकर आगे पूर्ण तथा मनोहर हो तो ७ वर्ष की आयु बतलाती है। (त) यह तर्जनी के पास किसी दूसरी रेखा से कटी हो और बुध स्थान पर भी किसी से कटी हो तो अल्पायु देती है।

इसके दीर्घायु मध्यायु और अल्पायु का विचार विस्तार पूर्वक सामुद्रिक रहस्य में दिया है।

दूसरा प्रकार।

करतल में भृगु स्थान के मध्य से एक त्रिभुज बनाया जाय जिसकी एक भुजा भृगु स्थान से उठकर बुध स्थान तक और दूसरी मणिबन्ध के करभान्त तक जाय तथा त्रिभुज के मध्य से एक लम्ब भाग्य रेखा पर गिराया जाय तो भाग्य रेखा के वर्ष की अवधि का यथार्थ ज्ञान होता है।

जैसे ।

प्रथम भुजा जो बुध स्थान को गई है वह भाग्य रेखा को ३५ वर्ष के मान में छेदन करती है और दूसरी २१ के मान में तथा लम्ब २८ वर्षके मान में भाग्य रेखा का स्पर्श करता है इसी अनुपात से अपर भुजाओंके द्वारा आगेके वर्षोंका निर्णय करना चाहिये जो अनेक त्रिभुजोंको बनाता है। जो चित्राङ्कित पितृ तथा भाग्य रेखा में दिये हुये अङ्कों से दोनों रेखाओं के वर्ष का ज्ञान स्पष्ट रीति से कराता है।
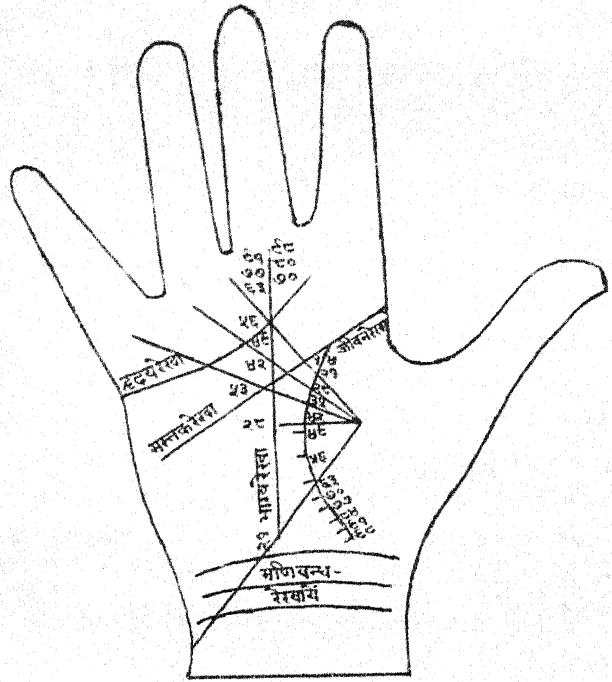
अथ रेखा नाम स्थान फल विचारः—

१– पितृ तथा मातृ रेखा के मध्य में धनागार स्थान है इस स्थान पर यदि स्वस्तिक (卐) चिन्ह हो तो मनुष्य धन धान्य युक्त होता है। यदि अनेक तिर्यक् रेखायें हों तो मनुष्य कृपण होता है। यदि कोई भी रेखा यहाँ न हो तो मनुष्य के हाथ में द्रव्य नहीं ठहरता। ऊर्ध्वादि रेखा की गणना तिर्य्यक रेखा में नहीं होती।

२—कनिष्ठा के मूल से तर्जनी के मूल तक तिर्यक् रूपा आयु रेखा कही जाती है, यह मनोहर अखण्ड तथा गम्भीर हो तो मनुष्य शान्त चित्त दयावान, पराक्रमी, अनेक सुख को भोगने वाला दीर्घायु और सुखी होता है। विपरीत होनेसे फल भी विपरीत होता है। यह आयु रेखा यदि आदि और अन्त में

स्फुटित (फुटी) हो तो बाल्यावस्था से ही मनुष्य का वीर्यपात होने लगता है और वह कामी तथा कुमार्गगामी होता है।

३—आयु मातृ तथा पितृ रेखा को कोई एक रेखा भेदन करे तो उसे दण्ड रेखा कहते हैं। इसके द्वारा मनुष्य क्रूरकर्म करने में निपुण होता है और उसी वर्ष प्रमाण में किसी आत्मीय जन के वियोग द्वारा भारी कष्ट पाता है।

४—अनामिका के मूल में विद्या, रवि वा कीर्ति रेखा होती है इसके अनेक रूपसे अनेक फल प्राप्त होते हैं।

५—अनामिका कनिष्ठिका या मध्यमा तर्जनी के बीच में यदि टूटी फूटी कुत्सित रेखा हो तो अधर्म कराने वाली अधर्म रेखा कहाती है।

६—पितृ रेखा के आदि वा मध्य तथा मातृ रेखा के भीतर चतुष्कोण □ रेखा को पुष्करिणी वा धन रेखा कहते हैं यह छोटी हो तो थोड़ा बड़ी हो तो बहुत उत्तम फल देती है।

७—अङ्गुलियों के पर्व में ऊर्ध्व रेखाओं को पर्व रेखा कहते हैं यदि पूर्ण स्पष्ट और सुन्दर हो तो शुभ फल देने वाली होती है। अस्पष्ट वा छिन्न हो तो उपद्रव को देती है। इसके संख्यानुसार विशेष २ फल सामुद्रिक रहस्य में दिये हैं।

८—ऊर्ध्व रेखा में दण्ड हो तो अनेक कष्ट और बिलम्ब से अच्छे कार्य सिद्ध होते हैं।

९—चारों अङ्गुलियों के पर्वों में पूर्णयव हों तो मनुष्य राजा वा राज्य तुल्य सुख भोगने वाला महा धनी होता है।

१०—यदि तर्जनी में चक्र हो तो शत्रु नाश होते हैं मध्यमा में मध्यम फल, अनामिका में यशस्वी कनिष्ठिका में शुभ होता है। चक्रों के संख्यानुसार फल सामुद्रिक रहस्य में दिये हैं।

११—अंगुष्ट के मूल में पूर्णयव होने से सुख और खण्डित होने से दुःख होता है। खण्डित सभी रेखायें निन्द्य हैं।

१२—अङ्गुष्ठ के नीचे उच्च स्थान में छोटी २ अनेक सूक्ष्म तथा छिन्न भिन्न रेखायें हो तो क्लेश देने वाली क्लेश रेखा कही जाती है। उच्च स्थान तथा शुक्र स्थान में इसी प्रकार वा तीर्यक् रूप होने से

शोक देने वाली शोक या हिंसा रेखा कही जाती है यह उत्तम फल देने वाली नहीं होती।

१३ बुद्धि (मातृ) रेखा खण्डित हो तो मनुष्य बुद्धिहीन होता है।

१४—पितृ रेखा के अन्त अर्थात् मणिवन्ध के ऊपर से मध्यमा के मूल याने शनि स्थान तक अखण्ड स्निग्ध मनोहर तथा गम्भीर रेखा हो तो उसे राजसुख देने वाली राज्य, भाग्य, ऊर्ध्व वा धन रेखा कहते हैं। इसके द्वारा मनुष्य प्रतापी माण्डलीक गृहभूमि वाटिका वाहन पुत्र पौत्रादि युक्त हो कर अनेक सुख भोगता है।

यह भाग्य का निर्णय करने वाली है। इससे अनेक फल कहे जाते हैं। यह रेखा पूर्वोक्त गुणों से युक्त हो कर तर्जनी के मूल याने बृहस्पति स्थान तक जाय तो राज्य या राज तुल्य सुख भोगने वाला प्रतापी मनुष्य होता है। एवं रवि स्थान याने अनामिका के मूल तक जाय तो धनी अनेक वाहन युक्त व्यापारी तथा स्त्री पुत्र युक्त हो कर सुखी रहता है।

एवं बुध स्थान तक जाय तो विद्यानुरागी अनेक शास्त्र का ज्ञाता माननीय उपकारी विदेश में रह कर सुख भोगने वाला होता है।

यह रेखा किसी भी स्थान पर जाय परन्तु छिन्न भिन्न या दण्ड युक्त हो तो अपने २ वर्ष प्रमाण में सान्सारिक अनेक कष्ट को देती है।

यह रेखा मणिबन्ध से ऊपर जिस स्थान से उठै उस वयो वर्ष से अपना फल देती है। इस रेखा के मूल में छोटी २ अनेक शाखायें हों तो मनुष्य वेतन द्वारा निर्वाह करता है। यह रेखा उमर के जिस वर्ष प्रमाण तक मनुष्य के हाथ में रहती है वहाँ तक पूर्ण उन्नति होती है इसके बाद साधारणतः निर्वाह होता है।

१५—पण रेखा के द्वारा भी सुख दुःख का निर्णय होता है। यह रेखा अङ्गुष्ठ के ऊपर नख के समीप्र तिरछी होती है। वहाँ जितनी रेखायें हों उतने का भाग आयु प्रमाण में देने से एक रेखा का फल मालूम होगा।

नख के समीप वाली रेखा को प्रथम रेखा गिनना इनमें जो छिन्न भिन्न हो वह कष्ट और जो पूर्ण तथा सुन्दर हो वह सुख देती है।

एवं न्यूनाधिक से न्यूनाधिक का अनुमान करना यह रेखा जिसके हाथ में न हो उस के अन्य रेखा अर्थात् रवि वा पुण्य रेखा से सब बातों का बिचार करना यदि वह भी न हो तो मातृ आयु तथा पितृ रेखाओं से विचार करना परन्तु वह प्राणी साधारण और कष्ट पाने पर अपने प्रारब्ध को कोसने वाला और प्रायः दुःखी रहता है।

१६– अंगुष्ठ के उच्च भाग तथा आयु पितृ रेखा के मध्य में काक-पाद के समान छोटी २ कुत्सित रेखा हो तो काकपाद या शृंखला रेखा कहाती है इससे धन पुत्र स्त्री शरीर मान प्रतिष्ठा इत्यादि का नाश होता है।

१७—मनुष्यों के हाथ में छत्र कमल धनुष रथ अंकुश वापी, स्वस्तिक तोरण चामर शंख चक्र त्रिकोण षट्कोण गज कलश प्रासाद मीन और यव इत्यादि अनेक अखण्ड शुभ रेखायें हों तो उनके द्वारा शुभ फल प्राप्त होता है। इनका वर्णन सामुद्रिक रहस्य में किया गया है।

अथ तिल विचारः।

१—मनुष्य के तर्जनी में तिल हो तो शत्रु नाशक। मध्यमा में धन प्रद। अनामिका में यशस्वी पराक्रमी सुखी और राजपुरुष बनाने वाला। कनिष्ठिका का अव्यवस्थितचित्त तथा परधन से धनी करने वाला और अङ्गुष्ठ का तिल सब कार्यों में निपुणता देने वाला होता है।

२—जिन रेखाओं पर शुभ लाल या काला तिल हो तो उनके फल को और भी बढ़ाता है और दुष्ट रेखाओं का फल नहीं होने पाता।

मनुष्यों के अनेक जन्म द्वारा जो २ प्रारब्ध संचित तथा क्रिय-माण कर्म होते हैं वे ही रेखा रुपये से अनेक जन्म के कर्म को दर्शाते हैं। रेखा के द्वारा मनुष्य उत्पन्न होते हैं और उसी से नष्ट भी होते हैं। सुख दुःख भय और क्षेम रेखा के द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

सुख दुःख की अवधि का परिज्ञान।

प्रत्येक प्राणियों को दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख हुआ करता है यह नियम है। अतः इसका परिज्ञान सामुद्रिक शास्त्र

के द्वारा कई प्रकार से होता है जो सामुद्रिक दर्पण तथा सामुद्रिक रहस्य में दिया है। और भी जो विषय उपलब्ध हुये हैं उनको इस ग्रन्थ में दिया जाता है।

समय ज्ञान।

आलोचने सुखदुःखे नवसप्तपञ्चत्रिद्विप्रभवति क्लेशः।
क्लेशात्परत्वे आनन्दः कथमतिमघवा वृष्टिर्यथाकाले॥

प्रत्येक प्राणियों के ९।७।५।३।२ वर्षों के परिमाण तक दुःख वा सुख रहते हैं इसके बाद फिर परिवर्तन हुआ करता है जो माप विधान वा पणरेखा तथा अपर अन्यान्य रेखाओं के द्वारा जाना जाता है।

अवस्था विचार।

प्रथम-जननसंस्थे पितृदुःखार्ति भागी।
द्वितय-जननसंस्थे दार-वार्तारतश्च॥
तृतय-जननसंस्थे राज-लक्ष्मीसदाढ्यः।
अथच जननतुर्ये जाह्नवीतीर्थ सेवी॥

भा०—प्रथम रेखाओं द्वारा आयु का निर्णय कर चार भाग करना प्रथम भाग में पिता माता तथा स्वशरीर सम्बन्धी दुःख सुख का विचार द्वितीय भाग में विवाह विद्या इत्यादि तृतीय भाग में राजयोग द्रव्य गृहभूमि वाटिका इत्यादि यथा वकाश प्राप्ति तथा चतुर्थ भाग में तीर्थादि सत्कर्मों का विचार करना समुचित है।

अथ दशक विचारः—

क्लेश रेखा बालक को जन्म से १० वर्ष तक देह पीड़ा के द्वारा अत्यन्त क्लेश रक्तविकार ऊपर से गिरना व्रण पूतनादि बाधा मूर्छा दाह वायु कोप उदर व्याधि विवर्णता जानवरों से भय और मृत्यु तुल्य कष्ट इत्यादि देती है।

इति प्रथम दशक।

शोक रेखा १० से २० वर्ष तक मानसी व्यथा वीर्य का अपव्यय कृशता चिन्ता मनोभिलषित कार्य की हानि जल तथा अग्नि से भय उदर विकार और शिरो वेदना इत्यादि अनेक कष्ट देती है।

राज रेखा (भाग्य हल पत्रादि) १८ वर्ष के उपरान्त चमत्कार दिखाने वाली, उद्योगमें बुद्धि, शत्रु मित्रादि का विचार, सुख दुःख का ज्ञान बुद्धि विस्तार तथा विवाहादि अनेक शुभ फल देने वाली होती है।

यदि राज रेखा में पाटवी रेखा प्राप्त हो तो मानी धनी कुलीन कृपण अत्यन्त क्रोधी उद्योग रहित चिन्तितशरीरकष्ट और अनेक प्रकार की पीड़ा प्राप्त होती है इसी में कार्यवाद हो तो कुटुम्ब द्वारा धन हानि ज्ञातिपीड़ा कलह शत्रुवृद्धि कार्यहानि नीच जनों का सहवास और नीचबुद्धि इत्यादि होती है शान्ति के द्वारा दोष शमन होता है। अच्छिन्न तथा श्रेष्ठ रेखा हो तो श्रेष्ठ फल होता है।

इति द्वितीय दशक।

तृतीय दशक में दुष्ट रेखाओं के द्वारा मातृ पितृ हानि, विवर्णता, मानसीचिन्ता, दारपुत्रादि वियोग, ऋण, धनकष्ट आदि अनेक प्रकार के दुःख होते हैं। उत्तम रेखाओं से धर्म में बुद्धि, उद्योग में सफलता, धन पुत्र स्त्री द्वारा सुख, राज्यमान, प्रतिष्ठा इत्यादि अनेक सुख होते हैं।

इति तृतीय दशक।

एवं चतुर्थ दशक में दुष्ट रेखाओं के द्वारा धन पुत्र स्त्री की हानि, गर्भपात, मानसीपीड़ा, शत्रुवृद्धि, शरीर कष्ट, रोग ऋण कलह इत्यादि अनेक प्रकार का कष्ट होता है।

उत्तम रेखा होने से धन, पुत्र, राज्यमान, सवारी, गृह, भूमि, वाटिका, जलाशय, विदेशभ्रमण, धन संचय, अनेक प्रकार के उपभोग इत्यादि सुख होते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक दशको में आयु पर्यन्त दुष्ट रेखाओं से स्त्री-पुत्र, धन, मान और प्रतिष्ठा की हानि, ऋण, कलह, दरिद्रता, अनुद्योग, स्थान या पद से च्युत होना चिन्ता शोकादि अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं।

और शुभ रेखाओं से उत्तम फलों की प्राप्ति उत्तम रीति से होती है और दुष्ट रेखा जनित क्लेश निवृत्त होता है। और यदि कुछ शुभ तथा कुछ अशुभ रेखायें हो तो सुखदुःख मिला जीवन व्यतीत होता है।

परन्तु भाग्य रेखा उत्तम होनेसे अनेक कष्ट आकर निवृत्त हो जाते हैं। पुत्र-पौत्रादि मान प्रतिष्ठा गृहभूमि वाटिका तीर्थ यात्रादि अनेक सत्कर्म द्वारा जीवन सार्थक होता है।

अतः भाग्य रेखा का विचार सब बातों के लिये करना परमावश्यक है। भाग्य रेखा के अभाव में पुण्य रेखा से विचार करना चाहिये।

इति चतुर्थदशक

अथ हस्त रेखातः जन्मपत्र ज्ञानमाह।

कृष्णपक्षे जन्म रात्रौ वामाङ्गुष्ठगतेयवे।
शुक्लपक्षे दिवा जन्म दक्षिणाङ्गुष्ठके यवे॥१॥

उभयाङ्गुलियोगेऽस्मिन् कृष्णपक्षे दिवाभवम्।
विद्धाविद्ध यवे पक्ष वैपरीत्यं क्वचिद्भवेत्॥२॥

अर्थात्—बायें अंगूठे में यव हो तो कृष्ण पक्षकी रात्रि में दक्षिण अङ्गुष्ठ में यव हो तो शुक्ल पक्ष के दिन में दोनों में हो तो कृष्णपक्ष के दिन में जन्म कहना चाहिये विद्धा विद्ध (छिन्न भिन्न या अपूर्ण) हो तो कभी-कभी इसके विपरीत पक्ष भी हो जाते हैं।

तिथि क्रम से चन्द्रमा के पूर्ण होने से पूर्ण और अपूर्ण होने से अपूर्ण यव होता है। इसके द्वारा अनुभव से तिथि के सामीप्य का ज्ञान भी होता है।

दोनों हाथ में यव न हो तो कृष्ण पक्ष का जन्म जानना परन्तु चन्द्रमा एकदम क्षीण रहता है।

कान की ललरी से भी पक्ष का बोध होता है। यदि कान की ललरी खुली हो तो शुक्ल पक्ष बँधी हो तो कृष्णपक्ष तथा पूर्ण चन्द्रमा के अनुसार यह भी खुली तथा बन्द रहती है। यह भी एक पक्ष है।

अथ ग्रह स्थितिः।

दिनोदयः स्मृतोऽङ्गुष्ठे मध्याह्ने मध्यमाङ्गुली।
सन्ध्यातारा ततोरात्रिः हस्तपृष्ठे व्यवस्थितः॥३॥

प्रातःकाल अङ्गुष्ठ में मध्यान्ह में मध्यमा में सायंकाल कनिष्ठा में और रात्रि में हस्तपृष्ठ में ग्रह स्थिति होती है ।

रविरङ्गुष्ठमध्यस्थस्तन्नखं चन्द्रमास्फुटः ।
मङ्गलस्तर्जनी शीर्षं नृपासनगतो बुधः ॥ ४ ॥
लक्ष्म्यां गुरूः कविर्गोर्यां कनिष्ठायां शनिर्मतः ।
हस्तपृष्ठे राहु—केतू चैवं वारास्तथाग्रहाः ॥
छाया सुतः शनिर्लोके छायारूपो विधुन्तुदः ।
तद्राशिचारे तारायां द्वितीये त्र्यंशके ध्रुवः ॥
तस्मात् सप्तमगः केतुरितिमध्याङ्गुली भवेत् ।
द्वितीय भागे नियतः प्रोक्तो लाक्षणिकैः बुधैः ॥
हस्तेक्षणदिने वारः प्रातस्तस्योदयक्रमात् ।
समये हस्त वीक्षायाः यःप्रोक्तोऽस्याङ्गुली स्मृतः ॥
एकोयामश्चतुः स्त्रिंशत्पलान्यथाक्षराणिच ।
षष्टि प्रमाणः सज्ञेयो वार भोगो विचक्षणैः ॥
तस्य वारस्त दङ्गुल्या स्वरूपेण शुभाशुभे ।
स्वराशि नाथ मैत्रादि ज्योतिः शास्त्र विमर्शनात् ॥

अर्थात्—अङ्गुष्ठ के मध्य पर्व में सूर्य अङ्गुष्ठ के नख पर्व में चन्द्रमा तर्जनी के अग्र पर्व में मङ्गल अङ्गुष्ठ के मूल पर्व में बुध मध्यमा में गुरु अनामिका में शुक्र कनिष्ठा में शनि तथा हस्त पृष्ठ में राहु केतु का वास स्थान है लोक में शनि को छाया पुत्र कहते हैं और राहु छाया रूप है। अतः राहु का संचार शनि के स्थान से द्वितीय त्र्यशंक अर्थात् कनिष्ठा के द्वितीय पर्व में है उससे सातवाँ अर्थात् मध्यमा के द्वितीय पर्व में केतुग्रह का निवास है।

हाथ देखने के दिन जो वार हो वह जिस अङ्गुली में हो प्रातः काल सूर्योदय से ८ घड़ी ३४ पल १७ विपल तक वही वार उस अङ्गुली के उसी स्थान में रहता है। बाद क्रम से उसके आगे के ग्रहों के दिन का विचार करना चाहिये । ६० दण्ड में सातो वारों का भोग हो जाता है इसलिये ८ दण्ड ३४ पल १७ विपल एक ग्रह दिन का मान हुआ। इसी प्रकार आगे के ग्रह दिनों का विचार क्रमशः करना चाहिये ।

१२ भाव विचारः ।

मेषादि द्वादशराशयः भावास्तन्वादि द्वादश ।
कनिष्ठा मूलपर्वाद्या नखाङ्गुष्ठाच्च कर्कत्रिः ॥

भा०—कनिष्ठा के मूल में मेष राशि और तनुभाव । कनिष्ठा के मध्य पर्व में वृषराशि धन भाव । कनिष्ठा के अन्त्य पर्व में मिथुन राशि सहज भाव । अनामिका के प्रथम पर्व में कर्क सुख भाव । अनामिका मध्य में सिंह सुत भाव । इसी क्रम से शेष राशियों और भावों का विचार करने से तर्जनी के नख पर्व में मीन राशि और व्ययभाव होता है और अङ्गुष्ठ के नखपर्व में कर्क मध्य में सिंह और मूल में कन्या राशि का निवास होता है ।

तिथि विचारः ।

कनिष्ठाद्यङ्गुली पञ्चमूलानन्दादयस्तिथिः ।
हस्तेक्षणंतिथिः सूर्य्योदयेदण्ड चतुष्टयम् ॥

भा०—कनिष्ठा मूल में १ मध्य में ६ और नख में ११ अनामिका के मूल में २ मध्य में ७ अन्त में १२ इसी प्रकार अङ्गुष्ठ के मूल में ५ मध्य में १० और अन्त में पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष में अमावास्या तिथि होती है ।

हर एक तिथि का मान चार २ घटी होने से १४ हो तिथियों का भोग ६० दण्ड याने १ दिन-रात में हो जाता है । हाथ देखने के दिन जो तिथि जिस अङ्गुली के जिस स्थान में हो सूर्योदय से चार २ दण्ड उसी स्थान से प्रारम्भ करना चाहिये ।

नक्षत्र ज्ञानम् ।

अश्विन्यादीनि ऋक्षाणि प्रत्येकं सप्तयोजयेत् ।
कनीनिकातः प्रारभ्य यत्र हस्तेक्षणस्य भम् ॥ १ ॥
प्राप्तं प्रष्ठुः स राशिः स्यान्मेषादि त्र्यंशकः क्रमात् ।
चन्द्रमात्रैव विन्यस्य चतसृष्वङ्गुलीष्वपि ॥ २ ॥

इति चन्द्र चक्रम् ।

भा० कनिष्ठिका अङ्गुली में अश्विनी से लेकर ७ नक्षत्र, अनामिका में पुष्यादि ७ नक्षत्र, मध्यमा में स्वात्यादि ७, तर्जनी में अभि-

जित् आदि ७ नक्षत्र होते हैं हाथ देखनेके दिन जो नक्षत्र उक्तमेषादि त्र्यंशक क्रमसे ४ अङ्गुलियों के जिस पर्वमें जो राशि हो उसी राशि में चन्द्रमा जानना।

अयन मासादि ज्ञानम्।

दक्षिणं अयनं दक्षहस्ते श्रावणकस्तले।
भाद्रोऽङ्गुष्ठे तु तर्जन्यां कुमारो मध्यकार्तिकः॥
अनामिका मार्गशीर्षः कनिष्ठा पौषमासकः।
उत्तरायणं वामहस्ते कनिष्ठामाघमासिका॥
फाल्गुनोऽनामिकाप्रोक्तामध्यायां चैत्रकः स्मृतः।
वैशाखस्तर्जनी ज्ञेयो ज्येष्ठोऽङ्गुष्ठः प्रकीर्तितः॥
आषाढ़स्तु तलेमासः वर्तमानोदयक्रमात्।
योज्या शरघटीमानादहोरात्रप्रमाणतः॥
दक्षहस्ते कृष्णपक्षः वामे शुक्लः करेक्षणः।
हस्तेक्षणतिथ्यङ्गुल्याः द्विघट्यः स्थूलमानतः॥
द्युमानेपञ्चदशभक्तौ ज्ञेया लब्धोदयातिथिः।
कनिष्ठाद्या त्रिपर्वेषु मृगाद्यारविसंक्रमाः॥
पर्वं धनुर्विजानीयात्तर्जन्याः :नखपर्वणि।

भा०—वर्तमान संक्रान्ति जिस अङ्गुली के जिस पर्व में हो वहाँ से लेकर अहो रात्रि का मान ६० घण्टा होने से १ लग्न का स्थूल मान ५ दण्ड होता है।

सूर्योदय से जिस घटी पर हाथ देखना हो उस समय वर्तमान संक्रान्ति के पूर्वोक्त क्रिया से लग्न का निश्चय करना, जो उदाहरण से स्पष्ट होगा।

उदाहरण

जैसे मेष के सूर्य में ३ घटी पर हाथ देखा गया तो उदय काल में ५ दण्ड तक मेष लग्न का मान रहेगा। मेष का मान अनामिका के आदि पर्व में होता है। इस से ग्रहों की स्थिति इस प्रकार जानना चाहिये—

कनिष्ठा के नख पर्व में शनि का निवास है जो लग्न से बारहवें स्थान में हुए। कनिष्ठा के द्वितीय पर्व में राहु एकादश स्थान में

हुए, राहु से सप्तम केतु होते हैं एवं शेष ग्रहों के लिये अङ्गुलियों के पर्व में जो ग्रह दिनों का मान कहा गया है। उसी रीति से ग्रहस्थापन करने से निम्नांकित चक्र प्रस्तुत होगा।

रवि का निवास जो अङ्गुष्ट के द्वितीय पर्व में माना गया है। उसे तर्जनी के द्वितीय पर्व में समझना चाहिये, क्योंकि १२ हो भाव चार ही अङ्गुलियों में गतार्थ हो जाते हैं। अतः अनामिका के प्रथम भाग में लग्न होने से तर्जनी का द्वितीय पर्व अष्टम हुआ इससे सूर्य अष्टम् स्थान में हुए।

रवि, मं, गुरु, राहु, केतु और शनि ये ६ ग्रह स्थिर हैं। चन्द्र, बुध और शुक्र ए ३ चलग्रह हैं।

यथा

रविः कुजो गुरुर्मन्दोराहुकेतू स्थिरा ग्रहाः।
शशी सौम्य स्तथा शुक्रश्चला खेटा बुधैःस्मृता॥

चलग्रहों के नियम तत्र बुधः

लग्नस्तुयस्यामङ्गुल्यां प्रथमे त्र्यंशके भवेत्।
तदा सूर्ययुतो सौम्यः भवत्येव न संशयः॥
द्वितीय त्र्यंशके लग्ने सूर्यपृष्टे बुधोमतः।
तृतीय त्र्यंशके लग्ने सूर्यादग्ने बुधस्मृतः॥

शुक्र

अंगुल्याः प्रथमे भागे शुक्रः सूर्येण संयुतः।
द्वितीय त्र्यंशके सूर्यात् द्वितीये भार्गवोमतः॥
तृतीये त्र्यंशके सूर्य्यात्तृतीये भवने स्थितः।
समांगुलौ कनिष्ठादि क्रमात्सूर्यस्तु पृष्ठगः॥
असमांगुलौतु सूर्याग्रे भार्गवस्यस्थितिर्भवेत्।

अर्थ स्पष्ट है

अंगुलियों के प्रथमादि भागों में जन्मलग्न होने से शुक्र बुध सूर्य के साथ या आगे पीछे उक्त श्लोक के क्रम से जानना चाहिये।

जन्म लग्न ज्ञानम् ।

अनुमान से अवस्था की कल्पना कर के व्यवहार के नाम की राशि को मान कर वर्ष और राशि का योग कर के १२ का भाग देना जो अंक शेष बचे उसे कनिष्ठा के आदि पर्व से गणना कर के उस पर्व में उस व्यवहार राशि को मानना ।

जैसे कल्पना करने से २० वर्ष का ज्ञान भया व्यवहार नाम रामचन्द्र हैं जो ७ वीं तुलाराशि हुई अब वर्ष २० और राशि ७ का योग २७ हुआ १२ का भाग देने से ३ शेष बचा जो कनिष्ठा का तीसरा पर्व हुआ वहीं तुलालग्न हुआ ।

कनिष्ठा के तृतीय पर्व में लग्न होने से सूर्य के आगे बुध रहेंगे । और विषम अंगुली होने से सूर्य के आगे तीसरी राशि में शुक्र रहेंगे । यह एक प्रकार है ।

अथारूढ़ लग्न ज्ञानम् ।

अण्डाङ्घ्रि कुक्षि वक्षो दोः शिरः दक्षाङ्ग रूढ़भम् ।
शिरसो व्युत्क्रमात् कीटात् वामाङ्गारूढ़ लग्नभम् ॥

आरूढ़ लग्न चक्रम् ।

अंघ्रि १२ वाम	अण्ड मेष १ वाम	अण्ड २ वृष दक्ष	अंघ्रि ३ दक्ष
कुक्षि ११ वाम	वामाङ्घ्रि	दक्षाङ्घ्रि	कुक्षि ४ दक्ष
वक्ष १० वाम			वक्ष ५ दक्ष
भुज ९ वाम	शिर ८ वाम	शिर ७ दक्ष	भुज ६ दक्ष

इन स्थानों के दक्षिण भाग में स्पर्श करके पृच्छक प्रश्न करे तो दक्षाङ्ग आरूढ़ लग्न जानना और वामाङ्ग स्पर्श करै तो वामाङ्ग आरूढ़ लग्न जानना चाहिये यदि पूछने वाला सामने होकर प्रश्न करै तो आरूढ़ जन्म लग्न होता है और दक्षिण भाग में बैठकर प्रश्न करै तो आरूढ़ लग्न से ५ वीं राशि जन्म लग्न; बायें होकर प्रश्न करै तो आरूढ़ लग्न से नवई राशि जन्म लग्न होता है।

जन्म काल की राशि का ज्ञान नक्षत्र ज्ञान के चन्द्र चक्र से करना चाहिये वा काल पुरुष के अङ्ग विभाग द्वारा समझना चाहिये।

जैसेः—

काल पुरुष ज्ञान

शीर्ष-मुख-बाहु-हृदयोदर-पाणि-कटि-वस्ति-गुह्यसंज्ञकानि ।
ऊरू-जानुक-जंघे चरणाविति च राशयोऽजाद्याः ॥ १ ॥

भा० मेष का शीर्ष, वृष का मुख, मिथुन का बाहु, कर्क का हृदय, सिंह का उदर, कन्या का कटि, तुला का वस्ति, वृश्चिक को गुह्य, धनु का ऊरू, मकर का जानु, कुभ का जंघा और मीन राशि का चरण स्थान होता है।

जन्म राशि निर्णय के समय प्रश्न कर्ता जिस अङ्ग को स्पर्श करै वही जन्म राशि मानी जाती है। प्रसङ्ग वश यहां पर यह भी जानना चाहिये कि प्रश्न कर्ता कोई शुभ काम (विवाहादि) पूछते समय जिस अङ्ग का स्पर्श करै उस काल पुरुष की जो राशि हो उसी समय के पञ्चाङ्ग में वह राशि पाप युक्त और पाप वीक्षित हो तो कार्य में विघ्न और शुभ ग्रह युक्त, शुभ ग्रह वीक्षित हो तो निर्विघ्न कार्य होता है। यदि पाप ग्रह शुभ ग्रह दोनों योग कारक हों तो बलाबल विचार कर अन्त में कार्य का निश्चय शुभाशुभ ग्रहों के द्वारा करना चाहिये।

चक्रः—

प्रश्न कर्त्ता के आरूढ़ लग्न से मेष ही जन्म लग्न होता है। इसलिये सब ग्रह यथार्थ रह गये। यदि दूसरा लग्न आवै तो चल ग्रहों (बुध. शुक. चन्द्र.) के नियम पर ध्यान रखना चाहिये।

प्रश्न कर्त्ता ने राशि निर्णय के समय जानु का स्पर्श किया था। अतः चन्द्रमा मकर राशि का हुआ।

अब चक्र से सम्वत् मास आदि का ज्ञान करना हो तो निम्नाङ्कित क्रिया करनी चाहिये।

केवल जन्म कुण्डली से शकादि ज्ञान

यस्मिन्राशौ भवेत्सौरी तस्मात् सार्धं च द्वे समाः।
शनिं यावद्भवेद्वर्षन्तथेज्याश्रित राशयः॥

इति वर्ष ज्ञानम्।

मास ज्ञानम्

वैशाखे स्थाप्यते मेषो यावद्भानुश्च गण्यते।
तावन्मासे भवेज्जन्म गर्गस्य वचनं यथा॥

पक्ष ज्ञानम्

यत्र राशौ भवेत्सूर्यस्तस्मात्सप्तगृहान्तरे।
चन्द्रः शुक्लो भवेत्पक्षः अन्यथा कृष्ण पक्षकः॥

तिथि ज्ञानम्

यत्र भानुः कुहुस्तत्र सार्द्धं द्वे गण्यते तिथि।
चन्द्रो यावत्समाख्यातं तिथिज्ञानंमनीषिभिः॥

दिवा रात्रि ज्ञानम्

सूर्य्याक्रान्तस्य भावानां लग्नं सप्त गृहान्तरे।
दिने जन्म वदेत्प्राज्ञः अन्यथा निशिजंभवेत्॥

काल ज्ञान

सूर्य्याक्रान्तस्य भवनात् पञ्च पञ्च हि गण्यते।
लग्ने यावत्समाख्यातं घटी ज्ञानं मनीषिभिः ॥

जन्माङ्गम्—
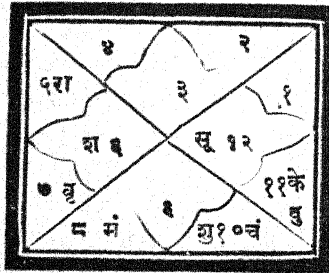
जन्म काल के गुरु और शनि के राशि से; वर्त्तमान सम्बत् के गुरु और शनि के राशि तक गिनना, गुरु के एक २ वर्ष का चार तथा शनि के ढाई वर्ष के चार के हिसाब से दोनों का सामीप्य वर्ष हो तो विषम को सम वर्ष मानकर गत वर्षकी कल्पना कर वर्त्तमान सम्वत् में घटाने से जन्म सम्बत् होगा। जैसे सं० १९९१ में कन्या राशि का गुरु और मकर राशि के शनि के समय में विचार किया तो कन्या राशि से मकर राशि का शनि ५ राशि होता है जो ढाई वर्ष के हिसाब से १२॥ वर्ष हुये उसमें १२ वर्ष लेना और तुला के गुरु से कन्या का गुरु १२ वर्ष का हुआ दोनों का सामीप्य होने के कारण गत १२ वर्ष हुये ९१ में १२ घटाने से ७९ सम्बत् हुआ शेष श्लोकों का अर्थ स्पष्ट है। उक्त रीति से क्रिया करने से सं० १९७९ चैत्र कृष्ण १३ उपरान्त १४ इष्ट १६ पर जन्म हुआ इस उक्त क्रिया से आसन्न मान आता है। यथार्थ मान निकालने के लिये विशेष क्रिया करनी पड़ेगी।

हस्त के द्वारा ग्रहों का ज्ञान और ग्रहों के द्वारा सम्बत् मासादि का ज्ञान करना चाहिये इस क्रिया को बारम्बार चिरकाल पर्यन्त अनुभव करके नष्ट जन्मपत्र तैयार किया जा सकता है।

मतान्तर से हस्तरेखा द्वारा जन्म पत्र का ज्ञान

मातृ पितृ रेखा यदि एक में मिली हुई और देखने में मनोहर हो तो उस मनुष्य का शुद्ध वंश में जन्म और वह सच्चरित्र होता है। भिन्न होने से फल भी भिन्न होता है।

मातृरेखा के द्वारा जन्म के मास, तिथि और वार का ज्ञान होता है।

मातृ रेखा यदि चन्द्र स्थान तक शुद्ध रूप से जाय और वहां पर यव वा त्रिकोण हो वा किसी अन्य छोटी रेखा से वेध हो अथवा कोई खास चिन्ह (जैसे गड़हा तिल इत्यादि) हो तो उस मनुष्य का जन्म कर्क की संक्रान्ति में सोमवार के दिन होता है।

यदि त्रिकोण तिल इत्यादि उसी रेखा के दूसरे ग्रह के स्थान पर हो और वेध दूसरे स्थान पर हो तो जहां त्रिकोण हो उस ग्रह का दिन और जहां वेध हो उस ग्रह की संक्रान्ति होती है परन्तु एक ग्रह के स्थान का मान ३० अंश होता है। अतः वेध जिस ग्रह के स्थान पर हो उस स्थान के नाप को समझ कर अनुपात से अंश की कल्पना करना। उस अंश के समीप जन्म दिन मिलने से तिथि का ज्ञान होता है। यह बहुत अनुभव से जाना जा सकता है। यदि मातृ रेखा बुध स्थान तक हो वा बुध स्थानसे कोई रेखा आ कर मातृ रेखा से मिलती हो तो मिथुन वा कन्या की संक्रान्ति में बुध के दिन जन्म होता है। यदि त्रिकोणादि चिह्न दूसरे ग्रह स्थान पर पाये जायँ तो उस ग्रह के दिन जन्म होता है एवं रवि के स्थान तक सिंह संक्रान्ति और शनि स्थान तक मकर या कुम्भ संक्रान्ति। गुरु के स्थान तक धनु और मीन संक्रान्ति। शुक्र स्थान से तुला और वृष संक्रान्ति। मंगल के स्थान से वृश्चिक और मेष की संक्रान्ति में जन्म होता है।

यद्यपि मातृ रेखा शनि, रवि, बुध, शुक्र और गुरु के स्थान पर नहीं जा सकती तथापि उक्त ग्रहों के स्थान से कोई रेखा आकर मातृ रेखा में मिले या उस ग्रह के सामने त्रिकोणादि चिह्न हो तो उक्त ग्रह सम्बन्धी सक्रान्ति दिनादि लिये जाते हैं क्योंकि तत्तद् ग्रहों का सम्बन्ध अवश्य किसी न किसी प्रकार से वहाँ पर रहता है। जिस ग्रह का स्थान स्वच्छ सुन्दर और मनोहर हो वह ग्रह अपने अधिकार से युक्त होकर उत्तम स्थान में रहते हैं और जिस ग्रह का स्थान कटा कुटा हो वह ग्रह अधिकार से हीन दुष्ट, दुष्ट स्थान में पाये जाते हैं। कुछ अच्छा और कुछ बुरा दोनों हों तो मिश्रित

स्थान अर्थात् अधिकार से युक्त दुष्ट स्थान में वा अधिकार से हीन उत्तम स्थान में पाये जाते हैं।

जिस ग्रह का स्थान कटा कुटा (छिन्न भिन्न) देखने में भद्दा हो वह ग्रह नीच तथा शत्रु राशि वा अस्तादि दोष युक्त होता है।

और जिस ग्रह स्थान में कमल त्रिकोणादि उत्तम चिह्न पाये जायँ तो वह ग्रह उच्च, मित्र तथा स्वगृह का अच्छे स्थान में पाये जाते हैं।

उक्त विचारों से दिन, संक्रान्ति तिथि, मास पक्ष तथा नक्षत्र का ज्ञान होता है।

आयु वा स्वान्त रेखा १६ षोड़ष प्रकार की है इसके द्वारा शुभाशुभ फल तथा समय का ज्ञान होता है।

१—यदि आयुरेखा स्थूला, मनोहर, पूर्ण तथा अविच्छिन्न हो तो उत्तम फल देने वाली होती है। इष्ट ५२।१५ रात्रि। आयु ६० वर्ष।

२—यह सरला तथा मनोहर हो तो मनुष्य सुन्दर तथा भाग्यशाली होता है। इसकी जन्म तिथि २ वा ३ होती है, यदि इस पर तिल हो तो ९ नवमी। इष्ट ५५।५० रात्रि। आयु ८५ वर्ष।

३—यह ऊपर को जाकर अङ्गुलियों की जड़ तक पहुंचे तो मनुष्य धैर्य्यावलम्बी होता है। जन्म तिथि ८ तिलयुक्त हो तो ५। इष्ट ५३।१५ रात्रि। आयु—८५ व०।

४—यह मातृ रेखा की ओर लटके तो अच्छे फल को देने वाली होती है। जन्म तिथि १२ तिलयुक्त हो तो १० इष्ट ४१—१४ रात्रि। आयु ८५ व०।

५—यह तर्जनी के पास गुरु स्थान पर किसी दूसरी रेखा से मिली हो तो मध्यम फल देती है। जन्म तिथि १४ तिलयुक्त हो तो १५ इष्ट ३८।७ रात। आयु ६० व०।

६—यह कनिष्ठा अंगुली के नीचे बुध स्थान पर किसी रेखा से कटी हो तो अच्छे फल देनेवाली होती है। जन्म तिथि ६ तिलयुक्त हो तो ३०। इष्ट १७। ० दिन। आयु ७० व०।

७—यह प्रथम और द्वितीय प्रकार के लक्षणों से मिलती हुई स्थूला और सरला हो तो उत्तम फल होता है। जन्म तिथि ७ तिल-युक्त हो तो १। इष्ट ४५।३ रात्रि। आयु ७६ व०।

८—यह तीसरे और चौथे प्रकार से मिलती हो तथा बुध स्थान ऊँचा और कर मध्य नीचा हो तो मध्यम फल होता है। इष्ट ३५।० रात। आयु २ मास।

९—यह पाँचवें तथा छठवें भेद के लक्षणों से युक्त हो तो मध्यम फल होता है। इष्ट ५।२५ दिन। आयु १८ व०।

१०—यह शुभ स्थान पर कटी हो तो निकृष्ट फल देनेवाली होती है। तिथि ४। इष्ट १।० दिन। आयु ५५ व०।

११—यह मध्य में खण्डित हो तो निंद्य फल देती है। इष्ट १२। १ दिन। आयु ११ व०।

१२—यह अन्त में टूटी हो तो मध्यम फल देती है। इष्ट १४। ७ दिन। आयु ४२ व०।

१३—इसके प्रारम्भ में तिल हो तो श्रेष्ट फल होता है। तिथि १३। इष्ट २७। ७ दिन।

१४—इसके मध्य में तिल हो तो यह श्रेष्ट फल दायक होती है। इष्ट ६। १४ दिन।

१५—इसके आदि मध्य और अन्त में तिल हो तो इसका फल अति उत्तम है। इष्ट ३६।० रात।

१६—सौराज्य दा। इष्ट ५६।३० रात।

नेत्र द्वारा समय का ज्ञान।

मध्य रात्रि के समय में जन्म होने से नेत्र कृष्ण वर्ण का होता है। रात १ बजे जन्म हो तो उससे कुछ साफ़। २ या ३ बजे जन्म हो तो भ्रमर के समान, ४ या ५ बजे जन्म हो तो नेत्र-तारक के पास श्वेत तथा तारा नील और श्वेत मिश्रित। यदि प्रातः काल ६ वा ७ बजे जन्म हो तो नेत्र का तारा किञ्चित नीलवर्ण और शेष भाग श्वेत। दिन ८ वा ६ बजे जन्म हो तो तारा का मध्य नील वर्ण, पार्श्व भाग मिश्रित (काला तथा नील) वर्ण। दिन को १० वा ११

बजे जन्म हो तो नेत्र नील वर्ण तथा छोटे छोटे चिह्न से युक्त हो। दोपहर दिन को जन्म हो तो नेत्र कुछ हरित वर्ण। दिन १ वा २ बजे जन्म हो तो नेत्र आधा नील और आधा हरित वर्ण का होता है। ३ वा ४ बजे जन्म हो तो मलिन हरित वर्ण। ५ वा ६ बजे सायं-काल जन्म हो तो तारा हरित तथा कृष्ण वर्ण। रात ७ वा ८ बजे जन्म हो तो नेत्र बिडाल के समान। ९ वा १० बजे जन्म हो तो आँख बिलार के समान किन्तु मध्य में कुछ रक्त वर्ण होती है। ११ बजे जन्म हो तो आंख रक्त और कृष्ण वर्ण होती है। ऐसी एक अंग्रेज विद्वान् की कल्पना है।

चिह्न द्वारा जन्म लग्न का ज्ञान।

जिस स्त्री वा पुरुष के शिरो भाग में तिल मसा या कोई चिह्न छल्ला इत्यादि दृष्ट हो तो निम्नांकित स्थानों से जन्म लग्न का निर्णय होता है।

कपाल के ऊपरी भाग में कोई चिह्न दृष्ट हो तो कर्क। दक्षिण तरफ सिंह। दक्षिण कपोल में कन्या, दक्षिण कर्ण में तुला। नासिका में वृश्चिक। दक्षिण नेत्र में धनु। चिबुक (दाढ़ी) में मकर। वाम स्थान में कुम्भ। वाम कपोल में मीन। वाम कर्ण में मेष। कपाल मध्य में वृष। वाम नेत्र में मिथुन लग्न का जन्म होता है।

शिरो भाग के उक्त १२ राशियों के जिस राशि स्थान में कोई चिह्न हो वही जन्म लग्न होता है।

अवस्था ज्ञान।

मणिबन्ध में प्राय: ३ या ४ रेखायें होती हैं। एक एक रेखा का मान ३० वर्ष होता है। एक रेखा स्पष्ट रूप से उदय हो तो ३० वर्ष की अवस्था समझनी चाहिये।

दो होने से ६०। तीन होने से ९०। ४ होने से १२० वर्ष की आयु होती है। मध्य में कोई रेखा खण्डित, आधी या चौथाई आदि हो तो अनुपात से वर्तमान अवस्था जानी जाती है। जैसे आधी से १५ डेढ़ से ४५ आदि। वर्तमान अवस्था तक स्पष्ट मनोहर

और शुद्ध रेखा होती है प्रायः रेखा देखने में पूर्ण मालूम होती है परन्तु वयः क्रम पर अवश्य छिन्न भिन्न या कोई विशेष चिह्न दिखाई पड़ता है। उक्त नष्ट पत्र सम्बन्धी सभी बातों का बहुत काल पर्यन्त अनुभव करने से वर्ष, मास, पक्ष, तिथि, राशि, लग्न, समय आदि का ठीक ठीक बोध होता है।

यह कई एक सामुद्रिक विद्वानों के अनुभव का संग्रह है। इसके द्वारा लाभ उठाने वाले पाठकों को सब का श्रेय मानना चाहिये।

इति नष्ट पत्र ज्ञानम्।

श्रीरस्तु।

साम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

मुद्रक—सांगवेदविद्यालय प्रेस, रामघाट, काशी।

॥ श्रीः ॥

* सूचना *

इस कार्यालय में ज्यौतिष सम्बन्धी सभी कार्य शुद्धतापूर्वक किये जाते हैं। जन्मपत्र, वर्षफल, प्रश्न, मूहुर्त, व्यापारियों के लाभार्थ तेजी, मन्दो कौन वस्तु कब खरीदने पर हानि वा लाभ होगा इत्यादि सभी बातें यथार्थ और ठीक समय पर बताई जाती है। दक्षिणा कार्यानुसार। फल-पुष्प दक्षिणा बिना हाथ देखाना समुचित नहीं है।

यदि आर्ट पेपर पर मोहर छापनेवाली स्याही से पुरुष अपने दाहिने तथा स्त्री अपने बायें हाथ का साफ फोटो छापकर अपना नाम तथा उमर लिखकर भेजेंगे तो सुख, दुःख, हानि, लाभ, स्त्री, पुत्र, धन, नौकरी तथा व्यापार सम्बन्धी सभी बातें स्पष्ट रूप से लिखकर भेजी जाती हैं। पत्रोत्तर के लिये टिकट भेजना चाहिये। दक्षिणा २) रुपया। पोस्टेज अलग।

पं० गौरीशङ्कर शर्मा राज ज्यौतिषी
सामुद्रिक सदन,
रामनगर, बनारस स्टेट।